GIRLS NOT BRIDES | The Global Partnership to End Child Marriage

युवा हो, साहसी हो,
तो राह दिखाओ उठो, अपनी आवाज़ उठाओ!

बाल विवाह को समाप्त करने के लिए : युवा प्रक्षिशण पाठ्यक्रम

प्रतिभागी मार्गदर्शिका

Acknowledgements

We would like to thank all *Girls Not Brides* member organisations, staff and expert consultants in the field who helped contribute to the development of this manual.

Cover photo © Allison Joyce / *Girls Not Brides*

Translation by Crystal Hues

Proofing by Mr. Yogesh Vaishnav, Vikalp Sansthan and Co-Convenor, Girls Not Brides Rajasthan

Design by www.alikecreative.com

Illustrations by Ariadna Vásquez

युवा हो, साहसी हो,
तो राह दिखाओ उठो, अपनी आवाज़ उठाओ!

बाल विवाह को समाप्त करने के लिए : युवा प्रक्षिशण पाठ्यक्रम

प्रतिभागी मार्गदर्शिका

इस काम में हमारा हर छोटे-से-छोटा कदम बदलाव लाएगा और हमें बाल विवाह ख़त्म करने के हमारे लक्ष्य के और करीब ले जाएगा।

हम अकसर लोगों को कहते हुए सुनते हैं कि, "युवा भविष्य के नेता हैं" और "युवाओं को नेतृत्व करने का मौका मिलना चाहिए"। पर मुझे पता है कि युवा पहले से ही नेतृत्व कर रहे हैं। गर्ल्स नॉट ब्राइड्स के एक-तिहाई से अधिक सदस्य संगठनों का नेतृत्व युवा कर रहे हैं, जो कमाल की बात है। इसका मतलब ऐसे संगठनों से है जहाँ दिन-प्रतिदिन का प्रबंधन करने, फ़ैसले लेने और किसी भी नागरिक समाज संगठन का प्रभावी संचालन सुनिश्चित करने वाली अन्य गतिविधियाँ युवाओं के हाथों में हैं। यह आँकड़ा इस बात की पुष्टि करता है कि युवा पहले से ही अपने-अपने समुदायों में बदलाव का नेतृत्व कर रहे हैं। पर इसके बावजूद, उनके काम को अकसर वह मान्यता या श्रेय नहीं मिलता है जिसका वह हक़दार है, या फिर उनकी बात सुनी नहीं जाती है।

यही कारण है कि मैं इस प्रशिक्षण को लेकर इतनी उत्साही हूँ। युवा कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर तैयार किया गया यह प्रशिक्षण, दुनिया भर में बाल विवाह ख़त्म करने में युवाओं की भूमिका को और बढ़ाने एवं उसको मजबूत करने में मदद करेगा । इसमें युवाओं को प्रशिक्षित करने की ऐसी ऊर्जावान और मज़ेदार विधियाँ तथा रणनीतियाँ हैं, जिनकी मदद से वे अपने-अपने समुदायों में बदलाव ला सकते हैं। युवा ऐसे शक्तिशाली कार्य कर रहे हैं, इसके लिए उनकी राष्ट्रीय-स्तर की प्रक्रियाओं में स्थान और भूमिकाएं सुनिश्चित होनी ही चाहिए। बालविवाह को ख़त्म करने के लिए कौनसी नीतियों की जरुरत है, ऐसे महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय युवाओं को उचित स्थान देने की जरुरत है. क्योंकि उनके बिना लिए गए निर्णय अप्रभावी होंगे और हमको वो बदलाव नहीं दिखेंगे जिनकी हमें अपेक्षा है।

फ़ोटो क्रेडिट : विमेन ऑफ़ द वर्ल्ड

मुझे अपने अनुभव से पता है कि कैसा लगता है जब आपका सामना ऐसे लोगों से होता है जो आपकी राय लिए बिना आपके भविष्य से जुड़ा निर्णय लेना चाहते हैं। ऐसे लोग जो यह सोचते हैं कि आपकी ज़िंदगी को केवल एक रास्ता पकड़ना चाहिए या वह केवल एक रास्ते पर जा सकती है, और वह है बचपन में ही शादी कर लेना।

जब हमारे मूल देश अफ़गानिस्तान में रहने वाले मेरे भाई ने शादी करने का फ़ैसला लिया तब मैं तेहरान में एक शरणार्थी के रूप में रह रही थी। मेरे परिवार को पैसा जुटाना था ताकि वह अपने लिए एक दुल्हन खरीद सके। उन्होंने वह पैसा जुटाने के लिए मुझे शादी के लिए बेचने का फ़ैसला किया। मैं तो जैसे तहस-नहस हो गई। यह तो वह ज़िंदगी नहीं थी जो मैं अपने लिए चाहती थी। मैं स्कूल जाना चाहती थी। मैं किसी की ज़ायदाद नहीं थी कि मुझे खरीदा और बेचा जाए। मैं वहाँ वापस लौटकर ग़ुलामी की ज़िंदगी जीने की सोच भी नहीं सकती थी। तो मैंने विद्रोह स्वरूप एक गाना लिखा। मैंने उसे नाम दिया बेटियाँ बिकाऊ हैं (Daughters for Sale) और एक दोस्त की मदद से उसका म्यूज़िक वीडियो बनाकर यूट्यूब पर डाल दिया। वह वीडियो वायरल हो गया! दुनिया भर से लोगों ने मुझसे संपर्क किया और उनमें से कुछ कमाल के लोगों की मदद से मुझे अमरीका आकर रहने का मौका मिला। आज़ पहली बार मैं एक असली स्कूल में हूँ, और मुझे उम्मीद है कि मुझे अपना भविष्य खुद चुनने का मौका मिलेगा। हालांकि मेरी ज़िंदगी कई तरह से बदली है, पर एक चीज़ है जो सबसे मुख्य बनी हुई है : बाल विवाह को ख़त्म करने के लिए एक कार्यकर्ता के रूप में मेरी भूमिका।

तो मैं - एक युवा के तौर पर, एक कार्यकर्ता की हैसियत से और गर्ल्स नॉट ब्राइड्स की एक ग्लोबल चैम्पियन की हैसियत से - आपसे कहती हूँ कि इस मैनुअल का उपयोग कीजिए और उम्मीद और ताक़त फ़ैलाइए। इस काम में हमारा हर छोटे-से-छोटा कदम बदलाव लाएगा और हमें बाल विवाह ख़त्म करने के हमारे लक्ष्य के और करीब ले जाएगा। कृपया सभी जातियों, धर्मों, देशों, नस्लों, जेंडर और विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों को शामिल करने के लिए उनके साथ काम कीजिए और उनका हौसला बढ़ाइए, क्योंकि जब हम सब साथ मिलकर काम करेंगे तभी हम बाल विवाह को ख़त्म कर सकेंगे। मुझे यकीन है कि हम यह कर सकते हैं। धन्यवाद।

सोनिता अलीज़ादेह
युवा कार्यकर्ता और गर्ल्स नॉट ब्राइड्स की ग्लोबल चैम्पियन

Photo © Lucia / Unsplash

विषय सूची

परिचय 8

मॉड्यूल 1 - आरंभ 10
मॉड्यूल 1 - सत्र 1: आइए साथ मिलकर काम करें 10
मॉड्यूल 1 - सत्र 2: बाल विवाह क्या है? एक बुनियादी परिचय 11
मॉड्यूल 1 - सत्र 3: बालविवाह – दुष्परिणाम और रोकथाम 16

मॉड्यूल 2 – अपने समुदाय में बालविवाह पर शोध करना 20
मॉड्यूल 2 - सत्र 1: जेंडर विश्लेषण 20

मॉड्यूल 3: कदम उठाइए - एडवोकेसी रणनीति विकसित करना 22
मॉड्यूल 3 - सत्र 1: लक्ष्य एवं उद्देश्य 22
मॉड्यूल 3 - सत्र 2: एडवोकेसी रणनीति तैयार करना 25

मॉड्यूल 4: साथ मिलकर हम अधिक शक्तिशाली हैं! 44
मॉड्यूल 4: सक्रियता का जोख़िम भरा पहलू 44

मॉड्यूल 5: प्रगति की निगरानी करना, शेयर करना और सीखना 52

समझाई गई मुख्य अवधारणाएँ 59

परिचय

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स दुनिया भर के 95 देशों के 900 से भी अधिक सामाजिक संगठनों की एक विश्व स्तरीय साझेदारी है जो बाल विवाह को खत्म करने और लड़कियों को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। हम सबका यह दृढ़ विश्वास है कि हर लड़की को अपनी पसंद की ज़िंदगी जीने का अधिकार है और यह कि बाल विवाह ख़त्म करके हम सभी के लिए एक अधिक सुरक्षित, अधिक स्वस्थ और अधिक संपन्न भविष्य हासिल कर सकते हैं। गर्ल्स नॉट ब्राइड्स के सदस्य साथ मिलकर अधिक मज़बूत हैं, और वे बाल विवाह ख़त्म करने के हमारे विज़न और मिशन को हासिल करने के लिए कई स्तरों पर काम करते हैं। वे पूरी दुनिया का ध्यान बाल विवाह के मुद्दे की ओर खींचने में, बाल विवाह ख़त्म करने के लिए क्या-कुछ चाहिए होगा इसकी समझ विकसित करने में, और राष्ट्रीय एवं सामुदायिक स्तर पर कानूनों, नीतियों और कार्यक्रमों में प्रगतिशील बदलाव की मांगें उठाने में मदद करते हैं; ये सभी वे कार्य हैं जो करोड़ों लड़कियों की ज़िंदगियों में बदलाव लाएंगे।

चैम्पियन है युवा

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स: बाल विवाह ख़त्म करने की वैश्विक साझेदारी, हमें गर्व है कि हमारे सदस्य संगठनों में से लगभग एक-तिहाई संगठनों की नेतृत्व युवा कर रहे हैं या युवा जिनका मुख्य भाग हैं। इसके अतिरिक्त, हमारे ऐसे सदस्य संगठनों की संख्या और भी अधिक है जो कार्यक्रमों और परियोजनाओं के जरिए युवाओं के साथ क़रीब से काम करते हैं और उन्हें अपना भविष्य को खुद बनाने के लिए सशक्त करते हैं। हमारा मानना है कि युवाओं की निरंतर और सक्रिय भागीदारी के बिना हम बाल विवाह ख़त्म करने का अपना लक्ष्य हासिल नहीं कर सकेंगे।

और हमारी इस सोच के पीछे के निम्न कारण हैं-

- युवा बदलाव के शक्तिशाली कारक हैं। बाल विवाह से सबसे सीधे तौर पर युवा ही प्रभावित होते हैं और यह आवश्यक है कि उनकी बात सुनी जाए। वे इस बेहद महत्वपूर्ण मुद्दे के बारे में जागरुकता फैला सकते हैं और अपने समुदायों को लड़कियों, उनके परिवारों और समुदायों के लिए इसके जो दुष्परिणाम हैं उन्हें समझने में मदद दे सकते हैं।
- बाल विवाह ख़त्म करने की कोशिशों में युवाओं को नहीं जोड़ पाने का मतलब बड़े पैमाने पर नतीजे हासिल करने का मौका हाथ से निकल जाना । ऐसे बहुत से देशों में, जहाँ बाल विवाह की दर अधिक है, वहां युवा आबादी का सबसे बड़ा हिस्सा हैं। उदाहरण के लिए, युगांडा में लगभग आधी आबादी 24 साल से कम उम्र की है, वहीं भारत में 20 करोड़ से अधिक युवा हैं।
- युवाओं की भागीदारी सामुदायिक स्तर पर बाल विवाह को खत्म करने का एक प्रभावी और महत्वपूर्ण तरीका है। हमारा अनुभव बताता है कि जब-जब युवा परिवर्तन प्रेरक बने हैं, तब-तब उन्होंने अपने समुदायों में बड़ी-बड़ी सफलताएं हासिल की हैं। इसमें हस्तक्षेपों और कार्यक्रमों की पहुँच और स्तर को बढ़ाना, और विभिन्न समूहों को, ख़ासतौर पर हाशिये पर मौजूद समूहों को जोड़ना शामिल है।
- युवाओं का जुडाव कार्यवाही और नीतिगत मांगों को अधिक साहसी और अधिक रचनात्मक बना सकती है। युवाओं के साथ काम करने से ऐसे "बंद" नीतिगत स्थान खुल सकते हैं, जिन्हें केवल प्रभावी लोगों की पहुँच में माना जाता है।

संवेदनशीलता एवं संरक्षण सूचना

- सभी को यह समझना होगा कि हम आने वाले सत्रों में बाल विवाह के मुद्दे पर बात करेंगे और यह एक संवेदनशील विषय है, जिससे कुछ लोग परेशान हो सकते हैं।
- यदि समूह का कोई व्यक्ति परेशानी महसूस करे और जाना चाहे, तो कृपया जब चाहे तब बेहिचक बता दे। जिसको भी यह लगे कि उसकी बात सुनी नहीं जा रही है, या आपको परेशानी या चिंता महसूस हो, तो कृपया जल्द-से-जल्द अपने प्रशिक्षक को इस बारे में बताइए, ताकि जो भी समस्या या तकलीफ़ हो उसकी रोकथाम में हम तत्काल मदद कर सकें।
- समूह में जो भी कुछ कहा जाता है वह गोपनीय होता है : यह बात करने और चीजें शेयर करने का एक सुरक्षित स्थान है।
- किसी को भी व्यक्तिगत अनुभव प्रकट करने के लिए कभी-भी मज़बूर नहीं किया जाएगा - सहभागिता हमेशा स्वैच्छिक है।
- संवेदनशीलता के प्रति जागरुकता और संरक्षण कायम रखना समूह के हर सदस्य की ज़िम्मेदारी है। हम सभी एक-दूसरे के योगदानों का सम्मान करते हैं और एक-दूसरे के अनुभवों को नकारात्मक ढंग से नहीं आँकते हैं।

यदि किसी को अतिरिक्त सहायता या सांत्वना चाहिए हो तो बाहरी सहयोग सदैव उपलब्ध है। सुनिश्चित कीजिए कि यदि आप आपको भावनात्मक सहयोग दे सकने वाले किसी कुशल व्यक्ति से बात करना चाहते हों तो आप हमारे पास आएंगे।

मॉड्यूल 1 - आरंभ

मॉड्यूल 1 - सत्र 1:
आइए साथ मिलकर काम करें

सत्र का लक्ष्य :

एक-दूसरे को जानना और साथ मिलकर एक प्रसन्न, सुरक्षित और भरोसेमंद संबंध बनाना।

सत्र की रूपरेखा :

- परिचय
- मॉड्यूल का संक्षिप्त विवरण : आगे आने वाले प्रशिक्षण सत्रों में कवर किए गए मुख्य मुद्दे
- अपेक्षाएँ : प्रशिक्षण से आपकी उम्मीदें और उससे संबंधित चिंताएँ
- संरक्षण चेतावनी
- सामान्य मूल नियम स्थापित करना

कार्यसूची

1	परिचय
2	समूह कार्य : यह प्रशिक्षण क्यों, और परिचय
3	प्रस्तुति : मॉड्यूल और विषय-वस्तु से परिचय - संवेदनशीलता और बाल संरक्षण चेतावनी सहित
4	समूह कार्य : अपेक्षाएं एवं उद्देश्य
5	समूह कार्य : साथ मिलकर कार्य करने के सिद्धांत स्थापित करना
6	सत्र समापन

हम सभी इस बारे में बात करने के लिए एक साथ हैं कि बाल विवाह को कैसे खत्म किया जाए और उसे रोकने के लिए असरदार ढंग से एडवोकेसी कैसे की जाए। इस प्रशिक्षण से आपको बाल विवाह ख़त्म करने के लिए अपने कौशलों को और मज़बूत बनाने में मदद मिलेगी। हम साथ मिलकर हर चरण से गुजरेंगे - 1.एडवोकेसी की स्पष्ट योजना कैसे बनाई जाए से लेकर, 2.दीर्घकालिक रणनीति कैसे बनाई जाए, और 3.अपने कार्य को और मज़बूत बनाने के लिए प्रभाव और साक्ष्यों को कैसे ट्रैक किया जाए। इस पहले सत्र से आपको एक दूसरे को थोड़ा और जानने में और, प्रशिक्षण में आप साथ मिलकर कैसे काम करेंगे इसके मूल नियम तय करने में मदद मिलेगी।

मॉड्यूल 1 - सत्र 2:
बाल विवाह क्या है? एक बुनियादी परिचयें

सत्र का लक्ष्य :

इससे आपको बाल विवाह की परिभाषा, उसके कारण, और समस्या के कारकों को समझने में मदद मिलेगी।

सत्र की रूपरेखा :

- बाल विवाह के बारे में और इस मुद्दे के बारे में आप क्या जानते हैं इस बारे में विचार-मंथन करना
- मुद्दे से परिचय : बाल विवाह की बुनियादी बातें

कार्यसूची

1	आपका स्वागत है
2	समूह कार्य : बाल विवाह को परिभाषित करना - खुली चर्चा (10 मिनट) - समूह कार्य (15 मिनट) - वापस समूहों से प्रस्तुति करवाना (10 मिनट)
3	प्रस्तुति : बाल विवाह की बुनियादी बातें
4	समूह कार्य : आपके समुदाय में बाल विवाह के कारण
5	प्रस्तुति : बाल विवाह के कारणें
6	फटाफट प्रश्नोत्तरी और निष्कर्ष

बाल विवाह की बुनियादी बातें

- संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार संधिपत्र वह सबसे महत्वपूर्ण मानवाधिकार संधि है जो बच्चों के सभी अधिकारों की रूपरेखा प्रदान करती है।
- बाल विवाह वे अनौपचारिक या औपचारिक गठजोड़ हैं जिनमें एक या दोनों पक्ष 18 साल से कम उम्र के होते हैं।
- हर साल 1.2 करोड़ लड़कियों का विवाह 18 साल की उम्र से पहले कर दिया जाता है : हर 2 सेकंड में 1. इसे रोकना ही होगा!
- यह मानवाधिकारों का उल्लंघन है और लड़कों की तुलना में लड़कियों को अधिक प्रभावित करता है।
- यह दुनिया भर में और विभिन्न संस्कृतियों एवं धर्मों में होता है।
- गर्ल्स नॉट ब्राइड्स की वेबसाइट पर कहीं अधिक जानकारी उपलब्ध है, इसलिए www.girlsnotbrides.orgपर जाइए।

बच्चा कौन है?

- संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार संधिपत्र (आमतौर पर जिसे संक्षेप में सीआरसी या यूएनसीआरसी कहा जाता है) एक मानवाधिकार संधि है जो बच्चों के नागरिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य संबंधी और सांस्कृतिक अधिकारों का वर्णन करती है। आप इसके बारे में और यहाँ पढ़ सकते हैं : https://bit.ly/2HjzOxV
- यह संधिपत्र 18 साल से कम उम्र के मनुष्य को बच्चे के रूप में परिभाषित करता है।

बाल विवाह क्या है?

- बाल विवाह वह औपचारिक या अनौपचारिक गठजोड़ है जिसमें एक या दोनों पक्ष 18 साल से कम उम्र के होते हैं।
- यूनिसेफ़ के हालिया आँकड़ों के अनुसार, हर साल लगभग 1.2 करोड़ लड़कियों का विवाह 18 साल की उम्र तक पहुँचने से पहले हो जाता है। इसका मतलब है कि हर मिनट 23 लड़कियाँ, या हर 2 सेकंड में एक लड़की - समय से बहुत पहले और बहुत कम उम्र में ब्याह दी जाती है, जिससे उसका व्यक्तिगत विकास, स्वास्थ्य और संपूर्ण कुशल-क्षेम ख़तरे में पड़ जाता है।
- यह प्रथा अधिकांशतः लड़कों से अधिक लड़कियों को प्रभावित करती है। आज जीवित पैंसठ करोड़ महिलाओं का विवाह उनके 18वें जन्मदिन से पहले कर दिया गया था, वहीं पुरुषों के मामले में यह आँकड़ा 15.6 करोड़ है।
- बाल विवाह को व्यापक रूप से मानवाधिकारों का उल्लंघन और लड़कियों के विरुद्ध एक प्रकार की हिंसा माना जाता है

यह कहाँ-कहाँ होता है?

- बाल विवाह वास्तव में एक वैश्विक समस्या है जो विभिन्न क्षेत्रों, देशों और संस्कृतियों में मौजूद है। यह दुनिया के लगभग हर देश में और सभी धर्मों तथा जातीयों में देखने को मिलता है।
- कुछ देशों में इसके बोझ (आबादी का वह प्रतिशत जो 18 साल से कम उम्र में विवाहित हो जाता है) या इसकी व्यापकता (बाल विवाह से प्रभावित होने वालों की संख्या) की दर बहुत अधिक है। नाइजर में इसका बोझ दुनिया में सबसे अधिक है, जहाँ देश की 20 से 24 साल की 76% महिलाओं का यह कहना है कि उनका विवाह 18 साल से कम उम्र में कर दिया गया था। भारत में बाल विवाह की संख्या सर्वाधिक है जहाँ 1.55 करोड़ महिलाएँ और लड़कियाँ इससे प्रभावित हैं।

अधिक जानकारी के लिए!

- बाल विवाह पर अधिक जानकारी और वैश्विक तथा देशवार नवीनतम आँकड़ों के लिए गर्ल्स नॉट ब्राइड्स की वेबसाइट पर आइए : www.girlsnotbrides.org

बाल विवाह के मुख्य कारण

- जेंडर जेंडर असमानता बाल विवाह का मूल कारण है। समाज में लड़कियों और लड़कों से, और महिलाओं एवं पुरुषों से समान व्यवहार नहीं किया जाता है, और अकसर लड़कियों को महत्व न देकर उन्हें बोझ समझा जाता है।
- ग़रीबी : यदि कोई परिवार ग़रीब है, तो अपनी बेटी का विवाह कम उम्र में कर देना परिवार पर और सीमित संसाधनों पर बोझ घटाने के रूप में देखा जाता है, जिससे भरने के लिए एक पेट कम हो जाता है।
- बाल विवाह को अकसर समुदाय की संस्कृति और परंपरा के हिस्से के रूप में देखा जाता है। कभी-कभी कुछ धर्म भी इस प्रथा की अनुमति देते हैं।
- जल्द, जबरन और बाल विवाह को अकसर लड़कियों को यौन दुर्व्यवहार, यौन उत्पीड़न, 'अवैध' यौन गतिविधियों, और यौन स्वच्छंदता से बचाने के एक तरीके के रूप में देखा जाता है।
- असुरक्षा और हिंसा भी एक कारण है क्योंकि परिवार ये सोचते हैं कि बेटियों का विवाह जल्द कर देना उन्हें सुरक्षा प्रदान करने का एक तरीका है।
- कमज़ोर सरकारी तंत्र : बाल विवाह के विरुद्ध कानून हैं, पर अकसर सरकारें इन्हें लागू नहीं करती हैं, या कानून के अपवाद मौजूद होते हैं।
- लड़कियों की सीमित शिक्षा और उनके लिए सीमित आर्थिक विकल्प एक महत्वपूर्ण कारण है जिसके चलते परिवार अपनी बेटियों का विवाह बहुत छोटी उम्र में कर देते हैं।
- जागरुकता का अभाव : बहुत से लोग, विशेष रूप से छोटी लड़कियाँ, अपने अधिकारों के बारे में या उनकी सुरक्षा कैसे की जाए इस बारे में नहीं जानते हैं।

बाल विवाह के कारण

- बाल विवाह एक जटिल समस्या है जो विभिन्न कारकों के कारण होती है - हम इन कारकों को इस समस्या के 'संचालक बल' कहते हैं। ये अलग-अलग देशों में, यहाँ तक कि अलग-अलग समुदायों में भी, अलग-अलग हो सकते हैं, और एक ही समुदाय या संदर्भ में समय के साथ-साथ बदल सकते हैं।
- बाल विवाह का मूल कारण जेंडर असमानता और, समाज में लड़कियों और महिलाओं को दिया जाने वाला कम महत्व है। लड़कों के कदाचित अधिक कमाई कर सकने के सामर्थ्य के कारण उन्हें अकसर परिवार के लिए अधिक मूल्यवान माना जाता है।

जेंडर का अर्थ पुरुषों और महिलाओं के बीच की, और समाज में वे जो भूमिकाएँ निभाते हैं उनके बीच की सामाजिक भिन्नताओं और संबंधों से है - न कि उनके बीच की जैविक भिन्नताओं से।

जेंडर समानता का अर्थ जीवन में और कार्यस्थल पर महिलाओं और पुरुषों, लड़कियों और लड़कों को दिए गए समान अधिकारों, ज़िम्मेदारियों, अवसरों, व्यवहार और महत्व से है। जेंडर समानता का अर्थ है कि सभी उम्र और दोनों लिंगों के लोगों के पास जीवन में सफल होने के समान अवसर हैं।

- बाल विवाह की प्रथा वाले कई समुदायों में लड़कियों को लड़कों जितना महत्व नहीं दिया जाता है और अकसर उन्हें परिवार पर एक अतिरिक्त बोझ के रूप में देखा जाता है। कम आमदनी वाले परिवारों में बेटी को छोटी उम्र में ब्याह देना, इस 'बोझ' को उसके पति के परिवार पर डालकर अपनी चिंताएँ घटाने के तरीके के रूप में देखा जाता है।
- बाल विवाह कई समाजों में हावी पुरुष मान्यताओं (जिन्हें पितृसत्तात्मक मान्यताएँ या विश्वास कहा जाता है), और महिला यौनिकता को नियंत्रित करने से भी नज़दीकी से जुड़ा है। उदाहरण के लिए, इसमें इस बात पर नियंत्रण शामिल है कि किसी लड़की को कैसे व्यवहार करना चाहिए, उसे कैसे कपड़े पहनने चाहिए, उसे किससे मिलने की अनुमति होनी चाहिए, और उसे किससे विवाह करना चाहिए - आमतौर पर यह नियंत्रण उसके पिता के, या परिवार अथवा समुदाय के पुरुषों के हाथों में होता है।
- कई समुदायों में परिवार अपनी बेटियों की यौनिकता की नज़दीकी सुरक्षा करते हैं। कौमार्य (कुँआरापन) को बहुत अधिक मूल्य दिया जाता है और उसका संरक्षण करना और उसे बचाए रखना अत्यावश्यक होता है, क्योंकि वह परिवार के मान-सम्मान से जुड़ा होता है और लड़की को पवित्र माने जाने के लिए ज़रूरी होता है। जिन लड़कियों के विवाहेतर यौन संबंध होते हैं, या जो बिना विवाह के गर्भवती हो जाती हैं उन्हें अकसर परिवार के लिए शर्म और अपमान का कारण माना जाता है।

संस्कृति और परंपरा

- कई समुदायों में बाल विवाह एक परंपरा है, या उसे किसी परंपरा, या संस्कृति, या कभी-कभी तो धर्म, का एक हिस्सा माना जाता है जो पीढ़ियों से चलता आया है।
- उदाहरण के लिए, कुछ समुदायों में जब किसी लड़की को माहवारी शुरू होती है, तो वह समुदाय की नज़र में एक स्त्री बन जाती है, और उसका विवाह कर देना उसे एक पत्नी और माँ का दर्जा दिलाने की दिशा में अगला कदम मान लिया जाता है, चाहे उसकी उम्र कुछ भी हो।
- अन्य परंपरागत प्रथाएँ अकसर एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं, ख़ासतौर पर लड़कियों के विरुद्ध हानिकारक प्रथाएँ, जैसे बालिकाओं/महिलाओं का ख़तना (एफ़जीएम/सी)। इसे महिला बनने के रास्ते पर जाने और, लड़की को 'निष्कलंक' माना जाए यह सुनिश्चित करने की एक रीति के रूप में देखा जाता है।
- हालांकि बाल विवाह की प्रथा की जड़ें परंपरा और संस्कृति में हैं, परन्तु ये पुरुषों द्वारा बनाई गईं प्रथाएँ हैं जिन्हें बदला और अद्यतित किया जा सकता है। इसलिए बदलाव सुनिश्चित करने की और, लड़कियों के लिए हानिकारक और क्षतिकारक इन प्रथाओं को ख़त्म करने की उम्मीद मौजूद है।

ग़रीबी

- अत्यधिक ग़रीबी वाले समुदायों में परिवार (कभी-कभी तो खुद लड़कियाँ भी) ये मानते हैं कि जल्द विवाह करना उनके भविष्य को सुरक्षित करने का एक समाधान है। इससे माता-पिता को परिवार के खर्चे घटाने में मदद मिलती है क्योंकि एक सदस्य का पेट भरने, उसके लिए कपड़े लाने और उसे पढ़ाने-लिखाने की ज़रूरतें ख़त्म हो जाती हैं।
- जिन समुदायों में दहेज या 'दुल्हन का मूल्य' दिया जाता है वहाँ ग़रीब परिवारों में इसे आमदनी का एक स्वागत-योग्य स्रोत माना जाता है। जहाँ दुल्हन का परिवार दूल्हे के परिवार को दहेज देता है वहाँ, यदि दुल्हन की उम्र कम हो और वह पढ़ी-लिखी न हो तो अकसर उन्हें कम दहेज देना पड़ता है, इसलिए परिवार खर्चे कम रखने के लिए यह विकल्प अपनाते हैं।
- लोगों की सोच और बाल विवाह की प्रथाओं पर आर्थिक स्थिति का मज़बूत प्रभाव होता है क्योंकि लड़कियों को कमाऊ सदस्य के तौर पर नहीं बल्कि आर्थिक रूप से आश्रित के रूप में देखा जाता है। लेकिन, बाल विवाह ग़रीबी के दुष्चक्र को चलाते रहने का काम करता है क्योंकि कम उम्र में ब्याह दी जाने वाली लड़कियाँ ठीक से पढ़-लिख नहीं पाती हैं या कमाऊ वर्ग का हिस्सा नहीं बन पाती हैं।

असुरक्षा और हिंसा

- युद्ध और टकरावों से त्रस्त देशों में लड़कियाँ उत्पीड़न और शारीरिक या यौन हमलों के अधिक जोख़िम में होती हैं। असुरक्षित इलाकों में माता-पिता का असलियत में यह विश्वास होता है कि अपनी बेटियों को कम उम्र में ब्याह देने में उनकी भलाई है और इससे उन्हें ख़तरे से सुरक्षा मिलती है।
- पर हकीकत यह है कि बालिका वधुएँ हिंसा के कहीं अधिक जोख़िम का सामना करती हैं, और उनके पास अपने अधिकारों का उपयोग, विशेष रूप से अपने साथियों के साथ अपने अधिकारों का उपयोग, करने की कहीं कम शक्ति होती है।

कमज़ोर सरकारी तंत्र

- बाल विवाह दुनिया के कई देशों में ग़ैर-कानूनी है। परन्तु कानून को कई तरीकों और प्रसंगों में मरोड़ा जा सकता है, उदाहरण के लिए, यदि उसमें किसी तरह के अपवाद हों, जैसे कानूनी संरक्षकों के तौर पर माता-पिता की सहमति के जरिए विवाह। कानूनों की अलग-अलग तरह की या असमान व्याख्याएँ की जाती हैं।
- बहुत से देशों में विवाह की न्यूनतम उम्र प्रथागत या धार्मिक कानूनों में कम होती है, जो राष्ट्रीय कानूनों और अंतरराष्ट्रीय संधिपत्रों के विरोध में होती है। कई देशों में कानून नहीं होते या कानून लागू करने के साधन नहीं होते और उनके सरकारी तंत्र कमज़ोर होते हैं - इसलिए कानून महत्वपूर्ण तो हैं पर वे अपने-आप में काफ़ी नहीं हैं।

सीमित शिक्षा और सीमित आर्थिक विकल्प

- स्कूल जाने और उच्च स्तर की शिक्षा पाने से लड़कियों को बाल विवाह की संभावना से सुरक्षित रहने में और उनको उनके अधिकारों के बारे में सशक्त करने में मदद मिलती है। कई देशों में लड़कियों को शिक्षित करना, लड़कों को शिक्षित करने से कम ज़रूरी समझा जाता है।
- जब किसी महिला की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक पत्नी, एक माँ और एक गृहिणी की मानी जाती हो, तो लड़कियों को पढ़ाना-लिखाना और उन्हें कामकाजी जीवन के लिए तैयार करना महत्वपूर्ण नहीं माना जाता है। यहाँ तक कि जो परिवार अपनी बेटियों को स्कूल भेजना चाहते हैं, अकसर उनके पास नज़दीक में अच्छे स्कूलों का और खर्चे उठाने के लिए पैसों का अभाव होता है। सीमित संसाधनों को लड़कियों की बजाय लड़कों की शिक्षा पर खर्चना अकसर एक अधिक सुरक्षित और आर्थिक रूप से लाभकारी विकल्प समझा जाता है।

जागरुकता का अभाव

- बाल विवाह माता-पिता में, समुदायों में, और खुद बच्चों में राष्ट्रीय कानूनों और बच्चों एवं महिलाओं के अधिकारों के बारे में जागरुकता के अभाव का भी नतीजा है। बहुत से लोग अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों या संधिपत्रों के बारे में - या उनके अधिकारों का संरक्षण सुनिश्चित कैसे हो इस बारे में नहीं जानते हैं।

मॉड्यूल 1 - सत्र 3:
बाल विवाह - दुष्परिणाम और रोकथाम

सत्र का लक्ष्य :

आपको लड़कियों पर बाल विवाह के प्रभावों को, रोकथाम की विभिन्न रणनीतियों को, और इस मुद्दे को हल करने में विभिन्न कर्ता जो भूमिकाएँ निभा सकते हैं उन्हें समझने में मदद देना।

सत्र की रूपरेखा :

- बाल विवाह के दुष्परिणामों के बारे में जानना
- बाल विवाह को खत्म करने के संभावित समाधानों से संबंधित मुद्दों पर विचार-मंथन करना

कार्यसूची

1	आपका स्वागत है
2	समूह कार्य : यह प्रशिक्षण क्यों, और परिचय
3	प्रस्तुति : मॉड्यूल और विषय-वस्तु से परिचय - संवेदनशीलता और बाल संरक्षण चेतावनी सहित
4	समूह कार्य : अपेक्षाएं एवं उद्देश्य
5	समूह कार्य : साथ मिलकर कार्य करने के सिद्धांत स्थापित करना
6	सत्र समापन

बाल विवाह के दुष्परिणाम

- बाल विवाह के बहुत से नकारात्मक प्रभाव होते हैं। यह लड़कियों को उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, विकास और संरक्षण के अधिकार से पूरी तरह वंचित कर देता है।
- बाल विवाह लड़कियों के मौलिक मानवाधिकारों के सभी पहलुओं - स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिकी, और असमानता - पर प्रभाव डालता है और उनका हिंसा एवं ग़रीबी का जोख़िम बढ़ाता है।
- बाल विवाह लड़कियों को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर देता है।
- इससे वे ग़रीबी के दुष्चक्र में बंध जाती हैं।
- इससे वह एक स्वस्थ जीवन जीने के अपने अधिकार से या अपने खुद के यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य एवं अधिकारों को नियंत्रित करने से वंचित हो जाती है : जबरन गर्भावस्था और कम उम्र में माँ बनने के कारण। नतीजतन गर्भावस्था और प्रसव के दौरान मृत्यु होने या चोट/क्षति पहुँचने का जोख़िम बढ़ जाता है।
- इससे उसके पास गर्भावस्था या संक्रमण रोकने की जानकारी या सेवाओं तक पहुँच न के बराबर रह जाती है और उसके जल्दी-जल्दी माँ बनने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।
- इससे उसके पास अपने फ़ैसलों पर मोलतोल/बातचीत करने या उन्हें नियंत्रित करने की शक्ति नहीं रह जाती है। विशेष रूप से, इससे एचआईवी/एड्स का संपर्क/जोख़िम बढ़ सकता है और लड़की, सुरक्षित यौन व्यवहारों पर अपनी बात मनवाने में असमर्थ हो सकती है। इससे उसके साथ शारीरिक, भावनात्मक या मौखिक दुर्व्यवहार होने की संभावना भी बढ़ जाती है।

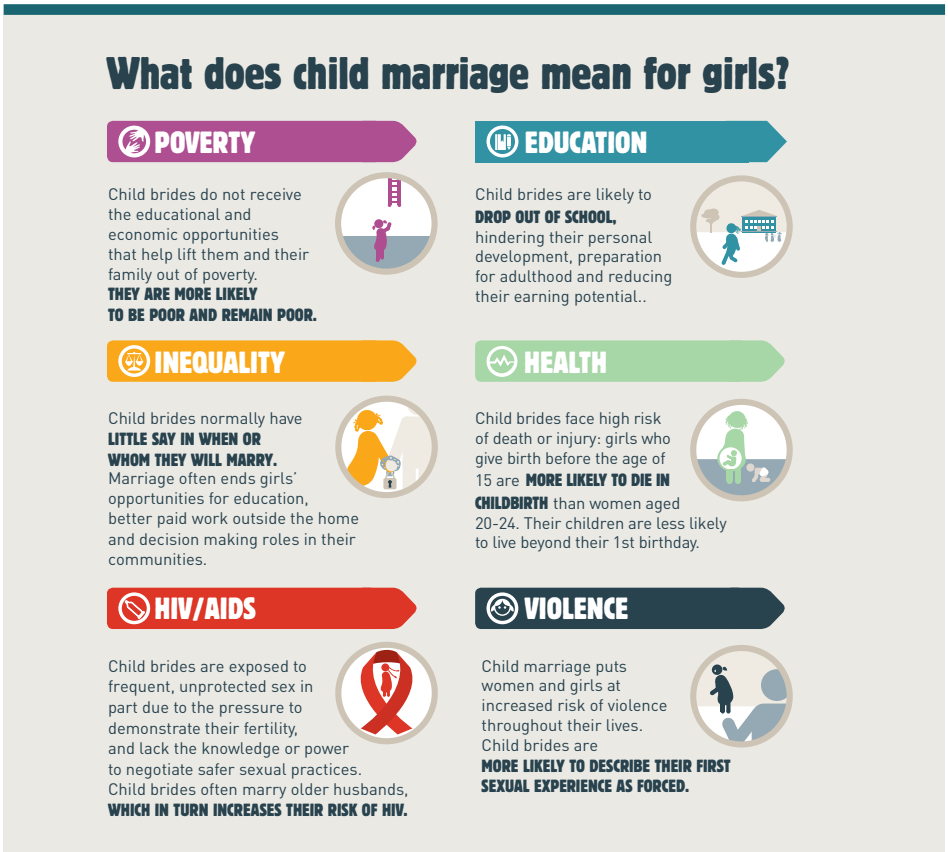

यह एक सरल डायग्राम है जिसको आप अपनी प्रस्तुति के लिए प्रयोग कर सकते हैं : ये सूचनाचित्र आप जो चर्चा कर रहे हैं उसे दृश्य रूप में दिखाने में उपयोगी होते हैं। ऐसे और संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर आइए : www.girlsnotbrides.org

- बाल विवाह मानवाधिकारों का एक उल्लंघन है। यह कम उम्र लड़कियों को उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, विकास और संरक्षण के अधिकार से पूरी तरह वंचित कर देता है। ये स्थितियाँ न केवल खुद लड़कियों को, बल्कि उनके बच्चों और गृहस्थियों को, और समुदायों एवं पूरे-के-पूरे समाज को भी प्रभावित करती हैं।
- स्वास्थ्य : छोटी उम्र में विवाह से लड़कियाँ स्वस्थ जीवन के अधिकार से वंचित रह जाती हैं, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि अकसर उन्हें कम उम्र में माँ बनने पर मजबूर किया जाता है, जिससे गर्भावस्था या प्रसव के दौरान मृत्यु होने या चोट/क्षति पहुँचने का जोख़िम बढ़ जाता है। इससे नवजात शिशु के लिए भी मृत्यु और दीर्घकालिक स्वास्थ्य जटिलताओं का जोख़िम बढ़ता है।
- इससे लड़कियों के लिए एचआईवी/एड्स का संपर्क/जोख़िम बढ़ सकता है क्योंकि वे सुरक्षित यौन व्यवहारों पर अपनी बात नहीं मनवा सकती हैं। इससे उनके साथ भौतिक, यौन और भावनात्मक हिंसा होने का जोख़िम बढ़ता है। 18 साल से कम उम्र में ब्याह दी जाने वाली लड़कियों के साथ ससुराल में हिंसा होने की संभावना, बाद में ब्याही जाने वाली लड़कियों की तुलना में अधिक होती है क्योंकि संबंधों में शक्ति का संतुलन बिगड़ा हुआ होता है।
- इससे लड़कियाँ अपने खुद के जीवन के बारे में चुनने और खुद के लिए मुख्य निर्णय करने के अधिकार से वंचित हो जाती हैं। बालिका वधुओं की इस बारे में नहीं चलती कि वे विवाह करेंगी या नहीं, करेंगी तो कब और किससे करेंगी।
- बाल विवाह लड़कियों को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर देता है। विवाह होने पर अकसर लड़की को स्कूल छोड़ना पड़ता है। इससे, उसके लिए नौकरी और लड़कों के समान आर्थिक अवसरों तक पहुँच सुनिश्चित करने वाले कौशल सीखने की उसकी योग्यता प्रभावित होती है। इसके बिना, वह ग़रीबी के दुष्चक्र से नहीं निकल पाती है और उसी में फँसी रहती है।

रोकथाम की रणनीतियाँ

- चूंकि बाल विवाह के इतने सारे कारण हैं, इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि इस प्रथा के ख़ात्मे की दिशा में हमारे कार्य के लिए भी बहुत से तरीके मौजूद हैं।
- बाल विवाह की रोकथाम करने का मतलब है कि हमें सभी स्तरों - विश्व-स्तर से लेकर सीधे सामुदायिक-स्तर तक - पर कदम उठाने होंगे। और हमें विभिन्न क्षेत्रों में साथ मिलकर कार्य कर रहे इतने सारे अलग-अलग समूहों - सरकारों से लेकर सामाजिक संस्थाएं, माता-पिता और समुदाय के नेताओं से लेकर सीधे आप, यानि सबसे सीधे तौर पर प्रभावित समूहों तक - से एक समावेशी और समूहिक पद्धति चाहिए होगी।
- गर्ल्स नॉट ब्राइड्स का बदलाव का सिद्धांत दिखाता है कि बाल विवाह की रोकथाम करने और विवाहित लड़कियों की सहायता करने के लिए हर किसी को भूमिका निभानी है। यह हमारी वेबसाइट पर उपलब्ध है।

सरकारें क्या कर सकती हैं ...

- बाल विवाह प्रतिबंधित करने के कानून बनाएँ और उनमें अपवाद संभव बनाने वाले खंडों/भागों, जैसे माता-पिता या धार्मिक सहमति के साथ कम उम्र में विवाह, को हटाएँ।
- सरकारों को ऐसी राष्ट्रीय रणनीतियाँ बनानी होंगी जो बाल विवाह को रोकने या उसे टालने की कार्य योजनाएँ हों। सबसे ग़रीब और सर्वाधिक हाशिये पर मौजूद लड़कियों को लक्ष्य बनाने के लिए इन राष्ट्रीय रणनीतियों में पृथक निवेश आवश्यक है, क्योंकि वे ही बाल विवाह के प्रति सबसे अधिक असुरक्षित होती हैं।
- अच्छी गुणवत्ता की सेवाएँ जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और संरक्षण, प्रदान करें और यह सुनिश्चित करने के लिए कार्य करें कि लड़कियाँ, चाहे वे जिस भी पृष्ठभूमि या आय-वर्ग की हों, इन सेवाओं तक पहुँच सकती हों। इससे माता-पिता भी अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के लिए और उन्हें अधिकतम संभव समय तक स्कूल भेजते रहने के लिए प्रोत्साहित होंगे।

सामाजिक संस्थाएं/संगठन (सीएसओ) क्या कर सकते हैं ...

- मुद्दे पर और उसमें जो भी कुछ शामिल है उन सबके बारे में जागरुकता फैलाएँ। चूंकि कई देशों में यह अभी-भी एक वर्जित विषय है, अतः चर्चाओं को प्रोत्साहित करने से समुदायों को जागरुक बनाने और शिक्षित करने में मदद मिलती है। लोगों के मौलिक मानवाधिकारों से संबंधित जानकारी के जरिए बाल विवाह के दुष्परिणाम शेयर करना - इससे लोगों को बाल विवाह से लड़कियों और महिलाओं पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों को समझने में मदद मिलती है। पुरुषों और लड़कों को जोड़ना महत्वपूर्ण है ताकि वे भी बाल विवाह को खत्म करने की लड़ाई में सक्रिय हो सकें।
- लड़कियों और उनके समुदायों को बाल विवाह को ना कहने के लिए सशक्त बनाने वाली परियोजनाएँ कार्यान्वित करें। ऐसा कौशल निर्माण करके, ज्ञानवर्धन करके, और लड़कियों की फ़ैसले लेने की योग्यताओं और अवसरों तक पहुँच को बढ़ाने में मदद करने वाले सहयोग नेटवर्क सुलभ करा कर किया जा सकता है। साथियों के नेटवर्क इसमें बहुत महत्वपूर्ण हैं।
- अन्य स्टेक होल्डर्स/हितधारकों के साथ कार्य करें : बाल विवाह के विरुद्ध सरकारी कानून का समर्थन करें, जहाँ ऐसे कानून मौजूद नहीं हैं वहाँ ऐसे कानून बनाए जाने के पक्ष में आवाज़ उठाएँ। धार्मिक नेताओं और समुदाय के बुजुर्गों को एकजुट करें और परंपरागत प्रथाओं, जैसे बाल विवाह, के हानिकारक प्रभावों पर शिक्षित करें।

समुदाय के और परंपरागत नेता क्या कर सकते हैं ...

- राय बदलने में सहायता करें - लड़कियों और महिलाओं को नुकसान पहुँचाने वाली परंपरागत और सांस्कृतिक प्रथाएँ बदली जा सकती हैं। "यह हमारी संस्कृति है" कहना अब काफ़ी नहीं रहा - और नकारात्मक प्रभावों को समझने तथा प्रथाओं को बदलने में, विशेष रूप से शिक्षा तक लड़कियों की पहुँच से जुड़े पारंपरिक, भेदभावपूर्ण विचारों को बदलने के संबंध में, परंपरागत और धार्मिक नेता बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।
- बाल विवाह के विरुद्ध कानून पारित करवाने में और इन कानूनों का समर्थन हो यह सुनिश्चित करने में सरकार और नागरिक समाज के प्रयासों का समर्थन करें। साथ ही, जानकारी को दूर-दूर तक फैलाने में भी मदद करें ताकि समुदाय का कोई भी सदस्य इस बदलाव में पीछे न छूटे।
- यदि प्रभावित समुदायों के पुरुष, बच्चियों से विवाह करने का विकल्प न चुनें तो बाल विवाह होंगे ही नहीं। इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि पुरुषों को लड़कियों के अधिकारों के बारे में और, कम उम्र में विवाह किस प्रकार लड़कियों के स्वास्थ्य और प्रसन्नता के लिए किस प्रकार हानिकारक है और पारिवारिक इकाई के लिए किस प्रकार विनाशकारी है इस बारे में, शिक्षित किया जाए। चूंकि अधिकांश परंपरागत या धार्मिक नेता पुरुष होते हैं, अतः वे महिलाओं एवं लड़कियों का मूल्य समझने के लिए समुदाय में बदलाव लाने के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं।

मॉड्यूल 2 - अपने समुदाय में बाल विवाह पर शोध करना

मॉड्यूल 2 - सत्र 1: जेंडर छानबीन

सत्र का लक्ष्य :

समूह के हर व्यक्ति द्वारा यह समझना कि जेंडर समानता से हमारा क्या अर्थ है और जेंडर विश्लेषण कैसे करते हैं। हम यह भी छानबीन करेंगे कि बाल विवाह के मुद्दे से निपटने के लिए लड़कों और पुरुषों को शामिल करना क्यों ज़रूरी है

सत्र की रूपरेखा :

- जेंडर जेंडर के बारे में जानना; जेंडर समानता क्या है
- जेंडर विश्लेषण कैसे करें
- उद्देश्य के समर्थकों के रूप में पुरुषों और लड़कों के साथ कार्य करना

कार्यसूची

1	स्वागत
2	खुली चर्चा : जेंडर क्या है?
3	समूहों में चर्चा : जेंडर की पहली यादें/ आप जेंडर विशेष के है इसकी महसुसियत की पहली याद
4	प्रस्तुति : जेंडर क्या है?
5	खुली चर्चा : जेंडर समानता
6	समूहों में चर्चा : जेंडर असमानता
7	प्रस्तुति : जेंडर समानता बनाम जेंडर असमानता क्या है?
8	प्रस्तुति : जेंडर विश्लेषण
9	समूह कार्य : जेंडर विश्लेषण करना
10	विचार-मंथन : पुरुषों और लड़कों को शामिल क्यों करें?
11	प्रस्तुति : पुरुषों और लड़कों के साथ कार्य करना
12	निष्कर्ष और सत्र समापन

लिंग

- जेंडर का अर्थ समाज में किसी पुरुष या महिला को सौंपी गईं आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिकाओं और ज़िम्मेदारियों से है।
- एक से दूसरी पीढ़ी में और अलग-अलग संस्कृतियों में जेंडर भूमिकाएँ बदल सकती हैं और अलग-अलग होती हैं। उदाहरण के लिए, प्राचीन मिस्र में पुरुष घर पर रहते थे और बुनाई करते थे। महिलाएँ पारिवारिक व्यवसाय संभालती थीं। महिलाओं को विरासत में संपत्ति मिलती थी और पुरुषों को नहीं। आधुनिक मिस्र में ये भूमिकाएँ पूरी तरह बदल चुकी हैं।
- यह निर्धारित करता है कि कोई पुरुष या महिला क्या कर सकते हैं, वे क्या हो सकते हैं, और किसी समाज विशेष में उनके पास क्या हो सकता है।

जैविक जेंडर (सेक्स) और जेंडर के बीच अंतर

जैविक जेंडर (सेक्स)

- जैविक होता है (भौतिक शरीर)।
- जन्म से मिलता है। यह प्राकृतिक है और इसका अर्थ लड़कों और लड़कियों के जननांगों में दिखाई देने वाले अंतरों तथा यौन क्रिया एवं संतानोत्पत्ति के दौरान नर एवं मादा की भूमिकाओं और कार्यों के संबंधित अंतरों से है।
- बदला नहीं जा सकता - सिवाय हार्मोन रिप्लेसमेंट या सर्जरी के जरिए।

लिंग

- सांस्कृतिक होता है।
- सामाजिकीकरण के जरिए सीखा जाता है (समाज के द्वारा बनाया जाता है इसलिए सिखाया और सीखा जाता है)।
- बदला जा सकता है और इसे चुनौती दी जा सकती है : महिलाएं इंजीनियर, पायलट आदि का कार्य कर सकती हैं।

जब आप बाल विवाह से निपटने के लिए कार्य करते हैं, तो यह समझना महत्वपूर्ण है कि किस प्रकार जेंडर मानदंड बाल विवाह की प्रथा को कायम रखने में एक भूमिका निभाते हैं। सामाजिक जेंडर (जेंडर) और जैविक जेंडर (सेक्स) दो अलग-अलग चीजें हैं। जैविक जेंडर (सेक्स) का अर्थ पुरुष और महिलाओं की जैविक विशेषताओं से है। उदाहरण के लिए : पुरुषों में शुक्राणु उत्पन्न होते हैं और महिलाओं में अंड कोशिकाएँ। सामाजिक जेंडर (जेंडर) का अर्थ समाज द्वारा पुरुषों और महिलाओं के लिए परिभाषित भूमिकाओं और व्यवहारों से है।

जब हम पुरुषों और महिलाओं से एक निश्चित ढंग से व्यवहार करने की अपेक्षा सिर्फ़ इसलिए रखते हैं कि वे पुरुष और महिला हैं, तो हम "जेंडर मानदंडों" का पालन कर रहे होते हैं। अलग-अलग संस्कृतियों में अलग-अलग जेंडर मानदंड हो सकते हैं या पुरुषों एवं महिलाओं से उनकी व्यवहार की अपेक्षाएँ अलग-अलग हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ संस्कृतियाँ महिलाओं से यह अपेक्षा करती हैं कि वे घर पर रहें और घरेलू कार्य करें, और पुरुष बाहर जाकर कार्य करें। इन मानदंडों को जेंडर भूमिकाएँ भी कहा जाता है; ये वे विशिष्ट भूमिकाएँ हैं जो समाज में, या यहाँ तक कि परिवार में भी, पुरुषों एवं महिलाओं से अपेक्षित होती हैं। जेंडर (जेंडर) का अर्थ किसी समाज विशेष में पुरुष या महिला होने के साथ जुड़े आर्थिक, सामाजिकऔर सांस्कृतिकविशेषताओं और अवसरों से होता है। यह निर्धारित करता है कि कोई पुरुष या महिला क्या कर सकते हैं, वे क्या हो सकते हैं, और किसी समाज विशेष में उनके पास क्या हो सकता है। एक से दूसरी पीढ़ी में, अलग-अलग समयों पर, और अलग-अलग संस्कृतियों में जेंडर भूमिकाएँ बदल सकती हैं।

- मनुष्य नर या मादा पैदा होता है, पर वह लड़की और लड़का होना सीखता है जो बड़े होकर महिला और पुरुष बनते हैं।
- जेंडर भूमिकाएँ किसी समाज, समुदाय या अन्य सामाजिक समूह विशेष में सीखे गए व्यवहार होते हैं। वे उन गतिविधियों, कार्यों और ज़िम्मेदारियों का निर्धारण करते हैं जिन्हें नर या मादा के रूप में देखा जाता है।
- लड़कियों और लड़कों को यह सिखाया जाता है कि उनके लिए सही व्यवहार और रवैया, भूमिकाएँ और गतिविधियाँ क्या हैं, और कैसे उन्हें दूसरे लोगों से संबंधित होना चाहिए। यही सीखा हुआ व्यवाहर जेंडर पहचान बनाता है, और जेंडर भूमिकाएँ तथा ज़िम्मेदारियाँ तय करता है।
- अलग-अलग संस्कृतियों में, और एक ही संस्कृति में अलग-अलग सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समूहों में जेंडर भूमिकाएँ बेहद अलग-अलग होती हैं।
- जेंडर भूमिकाएँ समय के साथ भी बदल सकती हैं। किसी समाज में लड़कियों और लड़कों तथा महिलाओं और पुरुषों के लिए समाज द्वारा परिभाषित भूमिकाएँ पीढ़ियों से गुजरते हुए बदल सकती हैं, वहीं कुछ अन्य समाजों में वे इसी जरिए से कहीं अधिक लंबे समय तक जारी रह सकती हैं। उदाहरण के लिए, प्राचीन मिस्र में पुरुष घर पर रहते थे और बुनाई करते थे। महिलाएँ पारिवारिक व्यवसाय संभालती थीं। महिलाओं को विरासत में संपत्ति मिलती थी और पुरुषों को नहीं। आधुनिक मिस्र में ये भूमिकाएँ बदल चुकी हैं।

जेंडर समानता बनाम जेंडर असमानता क्या है?

जेंडर समानता

- जेंडर समानता का यह मतलब नहीं है कि महिलाएँ और पुरुष समान हैं, बल्कि यह है कि उन दोनों का महत्व समान है और उनसे समान व्यवहार किया जाना चाहिए।
- महिलाओं और पुरुषों की भूमिकाओं को समान महत्व देना।
- रूढ़ियों और पूर्वग्रहों की बाधाएँ पार करने के लिए यह अत्यावश्यक है।
- महिलाओं और पुरुषों में शक्ति या सत्ता का समान साझाकरण।
- संसाधनों, अवसरों और सेवाओं की पहुँच में सभी प्रकार की असमानताओं का उन्मूलन, और समान अधिकारों को बढ़ावा।
- समानता यह मानती है कि पुरुषों और महिलाओं की अलग-अलग भूमिकाएँ और ज़रूरतें हैं।

जेंडर समानता

- जेंडर समानता का इतना सा मतलब नहीं है कि सभी गतिविधियों में पुरुष और महिलाएँ या लड़के और लड़कियाँ बराबर संख्या में भाग ले रहे हों, या फिर यह कि महिलाएँ और पुरुष समान हैं। इसका यह मतलब है कि पुरुषों और महिलाओं को समाज में समान मान्यता और स्थिति मिले और उन्हें बराबर का सम्मान मिले।
- इसका यह मतलब है कि हमारी समानताओं और असमानताओं को मान्यता दी जाती है और उन्हें समान महत्व दिया जाता है, ताकि हम सभी हमारा पूर्ण मानव सामर्थ्य हासिल कर सकें। इसका यह मतलब है कि हम सभी राष्ट्रीय, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में समान रूप से भाग ले सकते हैं, योगदान दे सकते हैं और उससे लाभान्वित हो सकते हैं।
- जेंडर समानता का अर्थ महिलाओं और पुरुषों की भूमिकाओं, और उनके योगदानों, गतिविधियों और कार्यों को समान महत्व देने से है।
- यह रूढ़ियों और पूर्वग्रहों को रोकने का कार्य करती है ताकि महिलाएं और पुरुष, दोनों ही अपने समाज में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक विकास में समान रूप से योगदान दे सकें और उससे लाभान्वित हो सकें।
- जेंडर समानता का मुख्य बिंदु यह है कि महिलाओं और पुरुषों में जो अंतर हैं उनसे उनकी जीवन स्थितियों पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं होना चाहिए; और न ही उन अंतरों के कारण जीवन के विभिन्न पहलुओं में महिलाओं और पुरुषों के बीच शक्ति या सत्ता का समान साझाकरण रुकना चाहिए।
- जेंडर समानता का अर्थ महिलाओं और पुरुषों के लिए समान अवसरों और परिणामों से है। इसमें संसाधनों, अवसरों और सेवाओं की पहुँच में सभी प्रकार की असमानताओं का उन्मूलन, और समान अधिकारों को बढ़ावा देना शामिल है।
- समानता का यह अर्थ नहीं है कि महिलाओं को पुरुषों के समान होना चाहिए। समानता को बढ़ावा देना यह मानता है कि पुरुषों और महिलाओं की अलग-अलग भूमिकाएँ और ज़रूरतें हैं, और विकास नियोजन तथा कार्यक्रमों में इन भूमिकाओं और ज़रूरतों को ध्यान में रखने पर ज़ोर देता है।

जेंडर असमानता क्या है?

- पुरुष और महिलाएँ शारीरिक रूप से अलग हैं पर इन अंतरों की जो सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और कानूनी व्याख्या है वह उनके बीच असमानता उत्पन्न करती है।
- महिलाओं और लड़कियों से भेदभाव - जैसे लिंग-आधारित हिंसा, आर्थिक भेदभाव, प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी असमानताएँ, और हानिकारक परंपरागत प्रथाएँ - असमानता का सबसे व्यापक और हठी रूप बना हुआ है।
- सामाजिक व्यवस्थाओं/समाज में असमानता : जब पुरुष के कार्य का दर्जा ऊँचा हो और उसे महिला के कार्य (जैसे बच्चे जन्मना, खाना पकाना और साफ-सफाई) से अधिक मूल्यवान और महत्वपूर्ण माना जाए। यह तब भी होती है जब महिलाओं को सेवाओं (उदाहरण के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य) तक कम पहुँच मिलती है, और जब सीधे तौर पर महिलाओं और लड़कियों के विरुद्ध, उनके जेंडर के कारण, हिंसा होती है।
- आर्थिक असमानताएँ : महिलाओं को आर्थिक संसाधनों, जैसे कौशल प्रशिक्षण, पूंजी, उधार, श्रम और भूमि के अवसरों, तक सीमित पहुँच मिलती है और उन्हें रोज़गार और करियर की उन्नति के सीमित अवसर मिलते हैं।
- राजनैतिक असमानता : समाज में औपचारिक निर्णय प्रक्रिया के सभी स्तरों पर, और विशेष रूप से क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तरों पर, महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत ही कम है।
- कानूनी असमानता : कई देशों का कानूनी तंत्र पारिवारिक कानून, विरासत, संपत्ति और भूमि स्वामित्व, नागरिकता और आपराधिक कानून में महिलाओं से भेदभाव करता है। महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के मामलों में मुकदमा करना और चलाना विशेष रूप से कठिन होता है।

जेंडर विश्लेषण क्या है?

- जेंडर विश्लेषण से जेंडर असमानता में योगदान देने वाले मुख्य मुद्दों की पहचान में मदद मिलती है।
- घर, समुदाय और देश में पुरुषों और महिलाओं के बीच जो भी फ़ासले हैं उन्हें रेखांकित करता है।
- समझाता है कि कैसे जेंडर मानदंड और शक्ति/सत्ता संबंध बाल विवाह को प्रभावित करते (और अकसर और मज़बूत करते) हैं।
- महिलाओं और पुरुषों, लड़कियों और लड़कों की भूमिकाओं और मानदंडों के बीच के अंतर को जाँचता है : उनके पास जो शक्ति होती है उसका अंतर; उनकी अलग-अलग ज़रूरतें, बाधाएँ, और अवसर; और उनके जीवन पर इन अंतरों का प्रभाव।

- जेंडर विश्लेषण जेंडर असमानता उत्पन्न या उसे और मज़बूत करने वाले मुख्य मुद्दों पर शोध करने और उनकी तलाश करने का एक तरीका है। ऐसा इसलिए है ताकि आप कारणों को पूरी तरह समझ सकें और उन पर ठीक से ध्यान देकर उन्हें ठीक किया जा सके।
- इससे आपको पुरुषों और महिलाओं के बीच के असमान अंतरों को समझने में मदद मिलती है। इससे आपको घर, समुदाय और देश में पुरुषों और महिलाओं के बीच जो भी फ़ासले हैं उनकी पहचान करने, उन्हें समझने और उन्हें समझाने में मदद मिलती है।
- इससे आपको यह देखने में मदद मिलती है कि कैसे जेंडर अंतर और शक्ति/सत्ता संबंध बाल विवाह को प्रभावित करते (और अकसर और मज़बूत करते) हैं।
- यह एक शोध विधि है जो महिलाओं और पुरुषों के पास जो शक्ति है उसके अंतर को; उनकी अलग-अलग ज़रूरतों, बाधाओं और अवसरों को; और उनके जीवन पर इन अंतरों के प्रभाव को देखती है।

जेंडर विश्लेषण करते समय आप पुरुषों और महिलाओं की भूमिका या पद/स्थान को समझने के लिए पाँच मुख्य मुद्दों पर नज़र डाल सकते हैं :

- समाज के कानून, नीतियाँ और नियम।
- सांस्कृतिक प्रथाएँ और मान्यताएँ।
- जेंडर भूमिकाएँ, ज़िम्मेदारियाँ और प्रत्येक पर बिताया गया समय।
- संसाधनों की पहुँच या उन पर नियंत्रण।
- शक्ति/सत्ता और निर्णय लेने के पैटर्न।

जेंडर विश्लेषण लड़कियों और लड़कों/महिलाओं और पुरुषों की भूमिकाओं, ज़िम्मेदारियों, ज़रूरतों और अवसरों पर नज़र डालकर किसी परिस्थिति विशेष के बारे में जानकारी इकट्ठा करता है, उसका विश्लेषण करता है और उसकी व्याख्या करता है। इसका लक्ष्य है :

- समूहों के बीच के अंतर पहचानना।
- यह समझना कि ये अंतर मौजूद क्यों हैं।
- यह देखना कि कौनसे विशिष्ट कदम/मुद्दे बाल विवाह को प्रभावित करते हैं।

बाल विवाह की जाँच-पड़ताल के लिए जेंडर विश्लेषण करते समय स्वयं से पूछने के कुछ प्रश्न :

- लड़कियों के कौनसे विशेष समूह बाल विवाह से प्रभावित होते हैं?
- सबसे असुरक्षित कौन है?
- जब लड़कियों का विवाह किया जाता है तो वे अमूमन किस उम्र की होती हैं?
- क्या वे स्कूल में हैं या छोड़ चुकी हैं?
- क्या वे समुदाय के किसी अल्पसंख्यक या सीमांत (हाशिये पर मौजूद) समूह की हैं?

जेंडर विश्लेषण के क्षेत्र	मार्गदर्शक प्रश्न	उत्तर ढूंढने में आपकी मदद करने वाले संसाधन
1. कानून, नीतियाँ और विनियम	1. क्या जेंडर भेदभाव को रोकने के लिए विवाह की न्यूनतम आयु, विवाह पंजीकरण और जन्म पंजीकरण के राष्ट्रीय कानून हैं? 2. क्या ये कानून राष्ट्रीय और स्थानीय स्तरों पर लागू हैं? क्या महिलाएँ और लड़कियाँ न्याय (जैसे पुलिस और न्यायालय) तक पहुँचने में समर्थ हैं या उन्हें ऐसा करने में संघर्ष करना पड़ता है? क्या लोग, परिवार और समुदाय इन कानूनों से अवगत हैं? 3. कानून और नीतियाँ स्थानीय स्तर पर विवाह से जुड़े फ़ैसलों को असलियत में किस प्रकार प्रभावित करते हैं? क्या राष्ट्रीय कानून से ऊपर, प्रथागत कानून बाल विवाह की अनुमति देते हैं? उदाहरण के लिए, यदि राष्ट्रीय कानून विवाह की न्यूनतम आयु बताता है, तो क्या लोग वास्तव में यही कानून मान रहे हैं?	1. मुद्दे पर कार्य करने वाले नीति-निर्माता, स्थानीय कानूनी संस्थान और सामाजिक संस्थाएं। आप इन्हें इंटरनेट पर भी खोज सकते हैं या गर्ल्स नॉट ब्राइड्स की वेबसाइट पर देश विशिष्ट जानकारी देख सकते हैं। 2. मदद कर सकने वाले विभिन्न लोगों से बात कीजिए : न्यायाधीश, पुलिस, सरकारी अधिकारी और प्रशासनिक कर्मचारी; आपके समुदाय में सक्रिय या कार्य कर रहे स्थानीय कानूनी संस्थान और सामाजिक संस्थाएं; खुद महिलाएँ और लड़कियाँ। 3. परंपरागत, धार्मिक और सामुदायिक नेता; स्थानीय सरकारी अधिकारी; बुजुर्ग; महिलाएँ और लड़कियाँ; पुरुष और लड़के।
2. सांस्कृतिक प्रथाएँ और मान्यताएँ	1. पत्नियों और माताओं के रूप में लड़कियों और महिलाओं के बारे में और, पतियों और पिताओं के रूप में लड़कों और पुरुषों के बारे में कौनसी स्वीकृत प्रथाएँ और विश्वास हैं? 2. विवाह के साथ कौनसी सांस्कृतिक और परंपरागत प्रथाएँ जुड़ी हुई हैं? इनमें दुल्हन की कीमत, दहेज, महिला ख़तना (एफ़जीएम/सी), बहुविवाह, दुल्हन अपहरण और महिला की पवित्रता पर ज़ोर देना शामिल हो सकते हैं। क्या विवाह का अर्थ कोई आर्थिक लेनदेन है, जैसे दहेज या दुल्हन की कीमत?	परंपरागत, धार्मिक और सामुदायिक नेता; बुजुर्ग; माता-पिता; महिलाएँ और लड़कियाँ; पुरुष और लड़के।

3. जेंडर भूमिकाएँ, ज़िम्मेदारियाँ और उन पर कितना समय बिताया गया है	1. महिलाएँ और लड़कियाँ घरेलू कामों और देखभाल में कितना समय बिताती हैं? इसमें छोटे भाई-बहनों, बूढ़े माता-पिता, या परिवार के शारीरिक रूप से अपंग सदस्यों की देखभाल करना शामिल हो सकता है। इसकी तुलना में पुरुष और लड़के इन कामों में कितना समय बिताते हैं? क्या कभी लड़कियों को घर के काम और देखभाल के काम करने के लिए स्कूल छुड़वा दिया जाता है? 2. छोटी उम्र में (18 से पहले) ब्याह दी गईं महिलाएँ और लड़कियाँ, अविवाहित महिलाओं और लड़कियों की तुलना में अपना समय किस प्रकार अलग ढंग से बिताती हैं? और क्या लड़कियों और लड़कों से की जाने वाली इस अपेक्षा में कोई अंतर है कि वे अपने समय का उपयोग कैसे करेंगे?	महिलाएँ और लड़कियाँ, पुरुष और लड़के, परिवार के बुजुर्ग।
4. संसाधनों की पहुँच और उन पर नियंत्रण	1. जब बात आमदनी तक पहुँच, ज़मीन की मिलकियत/ का मालिकाना, या अन्य परिसंपत्तियों और संसाधनों (जैसे फोन) तक पहुँच की हो, तो पुरुषों और महिलाओं के बीच क्या अंतर है? 2. क्या बचपन में ब्याह दी गईं महिलाओं और लड़कियों को समाज में अलग-थलग महसूस होता है? उदाहरण के लिए, क्या उन्हें अपनी सहेलियों से मिलने या स्कूल जाने की अनुमति नहीं है?	महिलाएँ और लड़कियाँ, पुरुष और लड़के।
5. शक्ति/सत्ता और निर्णय लेने के पैटर्न	1. लड़की का विवाह करना है या नहीं, और करना है तो कब और किससे, इस बारे में परिवार या समुदाय में निर्णय कौन लेता है? कौनसे सामुदायिक और धार्मिक नेता विवाह से जुड़े निर्णयों को प्रभावित करते हैं? 2. विवाह की उम्र और, पति-पत्नी के बीच उम्र का अंतर, संबंधों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं? विवाह में शक्ति/सत्ता किसके पास है और कौन सारे निर्णय लेता है?	परंपरागत, धार्मिक और सामुदायिक नेता; बुजुर्ग; माता-पिता; महिलाएँ और लड़कियाँ, पुरुष और लड़के।

पुरुषों और लड़कों को जोड़ना

- हम सभी को बाल विवाह को बढ़ावा देने वाले जटिल जेंडर और सांस्कृतिक मानदंडों को समझना होगा। बाल विवाह केवल महिलाओं/लड़कियों का मुद्दा नहीं है।
- समुदाय में/घर में निर्णय अधिकतर पुरुषों द्वारा ही लिए जाते हैं। निर्णयकर्ताओं और भावी पतियों के रूप में, पुरुष और लड़के बाल विवाह को ख़त्म करने की कोशिशों के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं।
- पुरुषों और लड़कों का समाजीकरण घर का कमाऊ सदस्य बनने, हावी होने और परिवार के अधिकांश निर्णय लेने की दृष्टि से किया जाता है। महिलाओं का पालन-पोषण घर की देखभाल करने (खाना पकाने, साफ़-सफ़ाई करने, बच्चे पैदा करने और उनकी देखभाल करने) की दृष्टि से किया जाता है।
- पिता, पति, बेटे और भाई की पारंपरिक भूमिकाओं को ध्यान रखने वाले, सहयोगी और अहिंसक होने, साझा ढंग से निर्णय लेने और घरेलू कामों में हाथ बँटाने वाला बनने की ओर बदलने की ज़रूरत है।
- पुरुषों और लड़कों को जेंडर भूमिकाओं पर सवाल उठाने होंगे और उन्हें बदलना होगा।
- पुरुषों और लड़कों का महिलाओं और लड़कियों के जीवन पर सीधा प्रभाव होता है।

लड़कों का भी बचपन में विवाह होता है, आज जीवित 15.6 करोड़ पुरुषों का विवाह 18 साल से कम उम्र में हुआ है। परन्तु बाल विवाह से प्रभावित होने वाली लड़कियों की संख्या, लड़कों के अनुपात में अत्यधिक है, उनके इस प्रथा से प्रभावित होने की संभावना लड़कों की तुलना में लगभग सात गुनी है। यह याद रखना ज़रूरी है कि युवा पुरुष, पीड़ित और बदलाव के कारक, दोनों हैं।
हालिया शोध बताते हैं कि जेंडर समानता हासिल करने में लड़कों और पुरुषों को शामिल करना बहुत ज़रूरी है। पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता को बेहतर बनाने के लिए यह ज़रूरी है कि पुरुष और लड़के, महिलाओं और लड़कियों के प्रति अपने रवैयों और व्यवहारों में बदलाव लाएँ। यदि हम बाल विवाह ख़त्म करना चाहते हैं, तो इसे हासिल करने में लड़कों और पुरुषों को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी ही होगी। यह बहुत ज़रूरी है कि वे यह समझें और मानें कि यह एक हानिकारक प्रथा है। इन कोशिशों से पुरुषों और लड़कों को बाहर रखने का यह मतलब होगा कि युवा महिलाओं और लड़कियों द्वारा महसूस किए गए लक्षणों मात्र पर ही काम हो सकेगा। मुख्य समस्या, जैसे पुरुषों और महिलाओं के बीच शक्ति/सत्ता के असंतुलित संबंध, निर्विरोध चालू रहेगी।

बाल विवाह ख़त्म करने के लिए हमें समाज की उन सांस्कृतिक और जेंडर भूमिकाओं को समझना होगा जो इस प्रथा में योगदान देती हैं। कई देशों में पुरुषों और लड़कों का समाजीकरण घर का कमाऊ सदस्य बनने, हावी होने और परिवार के अधिकांश निर्णय लेने की दृष्टि से किया जाता है। महिलाओं का पालन-पोषण गृहस्थी की देखभाल करने, जैसे खाना पकाना, साफ़-सफ़ाई, बच्चे पैदा करना, और उनकी देखभाल करना, की दृष्टि से किया जाता है। बाल विवाह ख़त्म करने के लिए समाज में हर किस की भूमिका पर सवाल करना होगा और समाज के सभी स्तरों पर सामाजिक मानदंडों और व्यवहारों को बदलने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। पिता, भाई, पति, ग्राम प्रधान, धार्मिक नेता, निर्णयकर्ता - इस हानिकारक प्रथा को ख़त्म करने के लिए हमें सभी के साथ मिलकर काम करना होगा, उन सभी पुरुषों/लड़कों का समर्थन हासिल करना होगा जो जानते हैं कि यह ग़लत है, और जो नहीं जानते उन्हें समझा-बुझाकर राजी करने के लिए साथ मिलकर काम करना होगा। बाल विवाह को खत्म करने में पुरुषों और लड़कों को जोड़ना ज़रूरी है क्योंकि :

- बाल विवाह केवल महिलाओं या लड़कियों का मुद्दा नहीं है।
- निर्णयकर्ताओं और भावी पतियों के रूप में, पुरुष और लड़के बाल विवाह को ख़त्म करने की कोशिशों के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं।

- जिन समुदायों में छोटी उम्र में या बाल विवाह आम है वहाँ धार्मिक बुजुर्ग और सामुदायिक नेता अकसर मुख्य निर्णयकर्ता होते हैं। वे अकसर पुरुष होते हैं। इन शक्तिशाली पुरुषों को संलग्न करना और उन्हें शिक्षित करना, बाल विवाह के प्रति समुदाय के रवैये को बदलने की कुंजी है।
- पुरुष या लड़का होने का क्या अर्थ है इससे जुड़ी सामाजिक अपेक्षाएँ यह तय करती हैं कि पुरुष और लड़के किस प्रकार व्यवहार करते हैं।
- पुरुषों और लड़कों को जेंडर भूमिकाओं पर सवाल उठाने चाहिए।
- पिता, पति, बेटे और भाई जैसी भूमिकाएं को ध्यान रखने वाले, सहयोगी और अहिंसक होने, साझा ढंग से निर्णय लेने और घरेलू कामों में हाथ बँटाने वाला बनने की ओर बदलने की ज़रूरत है।
- पुरुषों और लड़कों के पास इन मानदंडों पर सवाल उठाने की जगह नहीं है।
- पुरुषों और लड़कों का महिलाओं और लड़कियों के जीवन पर सीधा प्रभाव होता है।
- यदि हम पुरुषों और लड़कों को संलग्न नहीं करते हैं तो हम बाल विवाह जैसे संवेदनशील मुद्दों पर बदलाव नहीं ला सकते हैं।
- पुरुषों और लड़कों को लड़कियों के अधिकारों के बारे में जानना होगा और यह जानना होगा कि कैसे कम उम्र में विवाह उनके स्वास्थ्य और उनकी ख़ुशी के लिए हानिकारक हो सकता है और पारिवारिक इकाई के लिए किस प्रकार विनाशकारी हो सकता है।

मॉड्यूल 3: कदम उठाइए - एडवोकेसी रणनीति विकसित करना

मॉड्यूल 3 - सत्र 1: लक्ष्य एवं उद्देश्य

उद्देश्य :

जो बदलाव आप देखना चाहते हैं उसे परिभाषित करना और वह बदलाव हासिल करने के लिए आपको जो कदम उठाने होंगे उन्हें परिभाषित करना

सत्र की रूपरेखा :

- सीखिए कि जो बदलाव आप देखना चाहते हैं उसे कैसे परिभाषित करें
- अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य कैसे तय करें
- आपका आदर्श भविष्य क्या है
- आपको जो बदलाव चाहिए वह कैसे हासिल करें

कार्यसूची

1	स्वागत
2	समूह कार्य : आपका आदर्श भविष्य क्या है?
3	प्रस्तुति : लक्ष्य एवं उद्देश्य तय करना
4	समूह कार्य : अपना लक्ष्य परिभाषित करना - आप क्या बदलाव देखना चाहते हैं?
5	चर्चाओं को निष्कर्ष पर पहुँचाना और सत्र का समापन

लक्ष्यों और उद्देश्यों की परिभाषाएँ और उनके बीच के अंतर

लक्ष्य

परिभाषा

- वह मुख्य ध्येय जिसे आप हासिल करने के लिए काम कर रहे हैं।
- यह वह बड़ी तस्वीर या विज़न है जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।
- यह कुछ ऐसा है जिसकी दिशा में हम प्रयास करना चाहते हैं।
- लक्ष्यों को सख़्त तौर पर मापा नहीं जा सकता है या वे मूर्त नहीं होते हैं।
- उनकी समय-सीमा अधिक लंबी होती है।

उदाहरण : "मैं बाल विवाह को खत्म करने में सफल होना चाहता/ती हूँ।"

उद्देश्य

परिभाषा

- यह वो लक्ष्य है जो हम हमारी कोशिशों या कार्यों के जरिए हासिल करना चाहते हैं; यह हमारा प्रयोजन या ध्येय है।
- ये छोटे-छोटे, अधिक विशिष्ट चरण हैं जो आपको अपना लक्ष्य हासिल करने में मदद देंगे।
- मापे जाने योग्य और मूर्त होने चाहिए।
- मध्यम से लेकर अल्प अवधि के।

उदाहरण : "मैं महीना ख़त्म होते-होते बाल विवाह पर शोध करना चाहता/ती हूँ।"

लक्ष्य तय करने का मतलब है कि :

1) वह अंतिम बदलाव परिभाषित करना जिसमें आप योगदान देना चाहते हैं। लक्ष्य, उस दुनिया की एक स्पष्ट कल्पना है जो आप बनाना चाहते हैं - वह वांछित अंतिम अवस्था जिसे आप साकार देखना चाहते हैं और वह अंतिम विज़न जिसे आप अपने काम के जरिए हासिल करना चाहते हैं। इसे प्रेरक होना चाहिए और इससे यह स्पष्ट व्याख्या मिलनी चाहिए कि आप किसके लिए लड़ रहे हैं। लक्ष्य कोई ऐसी चीज नहीं जिसे आप अकेले अपने बूते हासिल कर सकते हों। उदाहरण के लिए, गर्ल्स नॉट ब्राइड्स में हमारा अंतिम विज़न और लक्ष्य है: बाल विवाह से मुक्त एक ऐसी दुनिया जिसमें लड़कियाँ और महिलाएँ, लड़कों और पुरुषों के बराबर हैसियत रखती हों और वे अपने जीवन के सभी पहलुओं में अपना पूरा सामर्थ्य हासिल करने में सक्षम हों।
2) अपने कार्यों के आकार और स्तर के जरिए सोचना। पता कीजिए कि आपमें से प्रत्येक व्यक्ति अपने लक्ष्य को हासिल करने में कितना समय दे सकता है। यथार्थवादी रहिए। आप जितना सीखते हैं, और साथ कार्य करने के लिए आप जितने लोगों को शामिल करते हैं, आपका लक्ष्य और आपकी आकांक्षाएँ भी उतना ही बढ़ सकते हैं। आप अपना लक्ष्य किसी समुदाय या जनसमूह विशेष पर फ़ोकस करना, कोई विशिष्ट लक्ष्य समूह चुनना, और उनके विशिष्ट मुद्दों पर ध्यान देना चाह सकते हैं।
3) आपके शोध, और जेंडर विश्लेषण ने आपके समुदाय में जो बातें सामने लाई हैं, और जिन चीजों का खुलासा किया है उनका आंकलन करना। अब एक लक्ष्य के रूप में आपको किस चीज पर काम करने की प्रेरणा और उत्साह महसूस हो रहा है? इससे ऐसे कौनसे विशिष्ट मुद्दे सामने आए जिन पर आप काम कर सकते हैं?

अपना लक्ष्य परिभाषित करना

- लक्ष्य उस दुनिया की एक स्पष्ट कल्पना है जो आप बनाना चाहते हैं।
- यह वह अंतिम, वांछित अवस्था या स्थिति है जो आप अपना कार्य पूरा होने पर साकार हुई देखना चाहते हैं।
- सबसे पहले, आपको यह रूपरेखा बनानी होगी कि आप क्या बदलना चाहते हैं, वे मुख्य मुद्दे क्या हैं जिन पर आप काम कर रहे हैं, और उन्हें हासिल करने के लिए आपको क्या कदम उठाने होंगे।
- इससे आपको अस्पष्ट विचारों की स्थिति से बाहर निकलकर, उन विशिष्ट कदमों और हासिल किए जाने योग्य बदलावों की योजना बनाने में मदद मिलती है जो आप अपने समुदाय/देश में देखना चाहते हैं।
- लक्ष्य लंबे समय के होते हैं (जैसे कोई पंचवर्षीय योजना), पर ऐसे कुछ बेहद विशिष्ट कदम होते हैं जो आप उन्हें हासिल करने के लिए उठा सकते हैं।

जब आप लक्ष्य कथन बना चुके हों, तो आपको अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए बाल विवाह की समस्या के ठोस समाधानों पर व्यवस्थित और विस्तृत ढंग से विचार करना होगा। ये आपको अपने काम के जरिए लक्ष्य हासिल करने में और, अपने काम पर फ़ोकस करने और उसे तथा ऐसा करने के लिए आपको जो चाहिए उसे प्राथमिकता के क्रम में रखने में मदद करेंगे। आपके उद्देश्य दिखाते हैं कि अल्प अवधि में आप कौनसे विशिष्ट बदलाव या परिणाम हासिल करना चाहते हैं।

उद्देश्यों को स्मार्ट (SMART) होना चाहिए, यानि उन्हें ऐसा होना चाहिए :

- विशिष्ट (Specific): वे आपको बताते हैं कि आप जो हासिल करना या बदलना चाहते हैं उसका विशिष्ट रूप से कितना अंश; यह कोई स्पष्ट संख्यात्मक लक्ष्य हो सकता है - जैसे 40%. यह समूह के उस व्यवहार, जिसे आप प्रभावित करना चाहते हैं, में संभावित बदलावों को, या अपने हस्तक्षेप के फलस्वरूप आप जो परिणाम देखना चाहते हैं उसे, निरूपित करता है। आपको इसकी एक समय-सीमा शामिल करनी चाहिए कि आपको उसे कब तक हासिल करना है, क्योंकि इससे आपको काम करने के लिए एक स्पष्ट दिनांक मिल जाता है; जैसे वर्ष 2020 तक।
- मापे जाने योग्य (Measurable): यानि उद्देश्य से संबंधित जानकारी को एकत्र किया जा सकता है, उसका पता लगाया जा सकता है, या प्राप्त किया जा सकता है (कम-से-कम संभावित रूप से तो) ताकि आप आपके हस्तक्षेप के फलस्वरूप होने वाले प्रभाव का आंकलन कर सकें और बदलाव को माप सकें।
- हासिल करने योग्य (Achievable) : आपके उद्देश्य यथार्थवादी होने चाहिए और आप जो बदलाव देखना चाहते हैं वे संभव होने चाहिए। इसका यह मतलब है कि न केवल खुद उद्देश्य संभव हों, बल्कि इस बात की संभावना भी हो कि आप सामूहिक रूप से (सहयोगियों/मित्रों के साथ कार्य करते हुए) उन्हें हासिल करने में सफल हो पाएंगे।
- विज़न के साथ प्रासंगिक (Relevant) : इस बात की एक स्पष्ट समझ मौजूद हो कि समूह के संपूर्ण विज़न या आप जो कार्य कर रहे हैं उसमें ये उद्देश्य किस प्रकार फ़िट होते हैं।
- समयबद्ध (Timed) : आपका समूह इसकी एक स्पष्ट समय-रेखा तैयार कर सकता है कि ये उद्देश्य कब हासिल होंगे। इस बात को उद्देश्य में ही स्पष्ट कर दें।

उद्देश्य परिभाषित करना

अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए बाल विवाह की समस्या के ठोस समाधानों का एक सेट बनाइए। उद्देश्यों को स्मार्ट (SMART) होना चाहिए, यानि :

- विशिष्ट (Specific): आप जो हासिल करना या बदलना चाहते हैं उसके लिए एक स्पष्ट संख्या या लक्ष्य; आप अपने हस्तक्षेप के फलस्वरूप क्या परिणाम देखना चाहते हैं; और एक समय-सीमा जिस तक आप उसे हासिल करना चाहते हैं।
- मापे जाने योग्य (Measurable): यानि उद्देश्य से संबंधित जानकारी को एकत्र किया जा सकता है, उसका पता लगाया जा सकता है, या प्राप्त किया जा सकता है ताकि आप आपके हस्तक्षेप के फलस्वरूप होने वाले प्रभाव का आंकलन कर सकें और बदलाव को माप सकें।
- हासिल करने योग्य (Achievable): यथार्थवादी, और जो बदलाव आप देखना चाहते हैं उसे सहयोगियों/मित्रों के साथ कार्य करते हुए हासिल करना संभव होना चाहिए।
- लक्ष्य के साथ प्रासंगिक (Relevant): समूह के संपूर्ण लक्ष्य या आप जो कार्य कर रहे हैं उसमें फ़िट होता हो।
- समयबद्ध : वे कब हासिल होंगे इस बात की एक स्पष्ट समय-रेखा।

मॉड्यूल 3 - सत्र 2:
एडवोकेसी रणनीति तैयार करना

उद्देश्य :

एडवोकेसी रणनीति तैयार करना औरआपके श्रोताओं के "दिल, दिमाग़ और हाथों" तक पहुँचने वाला - यानि उन्हें सोचने, महसूस करने और कुछ करने के लिए प्रेरित कर सकने वाला - एक अच्छा संदेश क्या होगा यह जानना। इसमें इस बारे में विचार हैं कि मीडिया के साथ कैसे कार्य किया जाए और ऐसी संचार गतिविधियाँ किस प्रकार की जाएँ।

सत्र की रूपरेखा :

- एडवोकेसी रणनीति तैयार करना
- संदेश क्या होता है और प्रभावी संदेश कैसे तैयार करें
- शक्तिशाली संदेश और प्रभाव रचित करने के लिए संचार का उपयोग कैसे करें

गतिविधि

1	आपका स्वागत है
2	समूह कार्य : अपनी आवाज़ और ताक़त ढूंढना
3	प्रस्तुति : एडवोकेसी रणनीति क्या होती है?
4	समूह कार्य : अपनीएडवोकेसी रणनीति बनाना
5	???????
6	प्रस्तुति : प्रभावी संदेश तैयार करना
7	समूह कार्य या ऊर्जावान बनाने वाली गतिविधि : प्रभावी संचार
8	निष्कर्ष और सत्र का समापन

अपनी आवाज़ और ताक़त ढूंढना

आपके पास एक युवा कार्यकर्ता और बदलाव की मांग करने वाला एडवोकेट बनने के जरिए अपने समुदाय में एक महत्वपूर्ण प्रभावशाली व्यक्ति बनने की ताक़त है! हम आपको अपनी आवाज़ ढूंढने और सभी के लिए एक बेहतर भविष्य की मांग करने हेतु सशक्त महसूस करने में मदद देना चाहते हैं।

प्रभावी एडवोकेट बनने के लिए आवश्यक है:

- उत्साह और ऊर्जा।
- चर्चा और लड़ाई जारी रखने की दृढ़ता।
- आप क्या बदलाव देखना/हासिल करना चाहते हैं इस बात की एक स्पष्ट सोच (विज़न)।
- दूसरों के साथ काम करने की योग्यता।
- अपने उद्देश्य के लिए थोड़ा समय और ऊर्जा लगाने की इच्छा।
- यह समझ कि हर किसी के विचार आप जैसे नहीं हो सकते हैं, और जिनके नहीं हैं उनको समझा-बुझाकर कैसे राज़ी किया जाए।
- अपना संदेश साफ़ और सरल तरीके से समझाकर लोगों को अपने पाले में लाने के लिए शक्तिशाली संचार कौशल।

युवा, बाल विवाह के मुद्दों के बहुत अच्छे एडवोकेट होते हैं क्योंकि :

- वे मुद्दे से सीधे तौर पर प्रभावित और उसमें शामिल होते हैं।
- उनके पास ऐसी जानकारी तक पहुँच होती है जो वयस्कों की पहुँच में नहीं भी हो सकती है, और परंपराओं या सामाजिक मानदंडों, जो समान बने रहने की बजाय पीढ़ी-दर-पीढ़ी बदल सकते हैं, के बारे में भिन्न विचार होते हैं।
- वे ऐसी लड़कियों की पहचान में मदद कर सकते हैं जोख़िम में हैं, और अकसर वे हस्तक्षेप में मदद भी कर सकते हैं।
- वे उस दबाव को समझ सकते हैं जो युवाओं पर उनके माता-पिता और समुदायों की ओर से होता है, विशेष रूप से परंपरागत प्रथाओं से संबंधित दबाव।
- वे यह विश्लेषण कर सकते हैं कि मुद्दे के लिए प्रस्तावित कोई समाधान काम करेगा या नहीं, और ऐसे समाधान या हस्तक्षेप का सुझाव दे सकते हैं जो दूसरों ने सोचे भी नहीं होते।

एडवोकेसी रणनीति तैयार करना

अब हम यह देखेंगे कि कैसे एक एडवोकेसी रणनीति वे बदलाव हासिल करने में आपकी मदद कर सकती है जो आप अपने काम के जरिए होते देखना चाहते हैं। यह एक रणनीति या योजना है जो हमें यह तय करने में मदद करेगी कि हमने जो मुख्य लक्ष्य चुना है उसे हासिल करने के लिए हमें कौनसी गतिविधियाँ करनी हैं, कब करनी हैं और किसे करनी हैं।

- एडवोकेसी रणनीति आपको उस प्रत्येक कदम या गतिविधि की योजना बनाने में मदद करती है जो आपको "बड़ी तस्वीर" या अपने कार्य के लिए आपने जो लक्ष्य तय किया है उसे हासिल करने में मदद करेगा/गी।
- सरल शब्दों में कहें तो, रणनीति से आपको इस बारे में स्पष्ट होने में मदद मिलती है कि : इस समय हम कहाँ हैं, हम कहाँ जाना चाहते हैं और वहाँ पहुँचने के लिए हमें क्या चाहिए होगा।
- एडवोकेसी रणनीति की गतिविधियाँ आपको इनमें मदद देती हैं :
  - किसी परिवेश विशेष में काम करने से उत्पन्न हो सकने वाले अवसरों और चुनौतियों का और, चुनौती या जोख़िम से पार पाने के लिए आपको कौनसे कदम उठाने होंगे इस बात का आंकलन करना।
  - यह सुनिश्चित करना कि आपने उपलब्ध संसाधन और बजट आवंटित किए हों, और कार्य एवं गतिविधियाँ, जैसे रिपोर्टिंग और मूल्यांकन आदि, आवंटित किए हों।
  - अन्य हितधारकों या कर्ताओं के साथ संबंधों का प्रबंधन करना और अपना नेटवर्क संभालना। इससे आपको यह देखने में भी मदद मिलेगी कि आपको किसके साथ काम करना है।
  - जिस लक्ष्य श्रोतावर्ग को आपको संबोधित करना है उसे राज़ी करने के लिए अपने संदेश किस प्रकार ढालें।
- रणनैतिक नियोजन एक व्यवस्थित पद्धति है जो दूसरों को किसी मुद्दे में शामिल होने के लिए हमारी योजना से अवगत कराना संभव बनाती है।

- रणनैतिक संदेश बनाने से आपको प्रासंगिक श्रोतावर्ग को लक्ष्य बनाने में और अधिक प्रभावी संचार उत्पन्न करके कहीं बड़ा प्रभाव हासिल करने में मदद मिलेगी।
- इससे आपको अपनी पूरी बड़ी तस्वीर वाले लक्ष्य (या विस्तृत ध्येय) को कहीं बेहतर ढंग से संभाले जा सकने वाले कदमों में बाँटने में भी मदद मिलती है। इनसे आपको वह बदलाव हासिल करने के और नज़दीक पहुँचने में मदद मिलेगी जो आप अपने कार्य के फलस्वरूप होता देखना चाहते हैं।

अब जबकि आपने अपने मुख्य लक्ष्य और उद्देश्य तैयार कर लिए हैं, आप उन्हें अधिक विस्तार से छोटे-छोटो टुकड़ों में बाँटने को और यह विचार करने को तैयार हैं कि उन्हें हासिल करने के लिए आप साथ मिलकर कौनसे व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं - एक बार में एक कदम। एक कार्यकर्ता बनकर अपने समुदाय, परिवार, स्कूल या कहीं भी बदलाव लाने में मदद करने की ताक़त आपके हाथों में है!

एडवोकेसी रणनीति इस प्रक्रिया की योजना बनाने में मदद करने का एक तरीका है। यह आपको उस प्रत्येक अलग-अलग गतिविधि की योजना बनाने में सक्षम बनाती है जो उस "बड़ी तस्वीर" या लक्ष्य को हासिल करने में योगदान देगी जिसकी दिशा में आप कार्य कर रहे हैं। इससे आपको व्यवस्थित और विस्तृत ढंग से यह सोचने में भी मदद मिलती है कि आपकी टीम में से कौन वह गतिविधि करेगा, और आपका लक्ष्य श्रोतावर्ग या हितधारक/स्टेक होल्डर्स कौन होंगे। इसमें आप उन कदमों की योजना बना रहे हैं जो आपको अपना वांछित बदलाव हासिल करने के लिए उठाने होंगे। आपकी रणनीति वह गतिविधि समूह समझाएगी जो दीर्घकालिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए की जानी हैं। सरल शब्दों में, आपको इन प्रश्नों के उत्तर ढूंढने चाहिए :

- इस समय हम कहाँ हैं?
- हम कहाँ जाना चाहते हैं?
- हम वहाँ कैसे पहुँचें?

हर कदम में निम्नलिखित शामिल होने चाहिए :

- आप जिस परिवेश / संदर्भ में कार्य करते हैं उसके अवसरों और चुनौतियों को देखते हुए, प्रभावी ढंग से कार्य करने के तरीके।
- आपके पास जो संसाधन उपलब्ध हैं उनका आवंटन।
- हितधारकों/स्टेक होल्डर्स, और आप जिस नेटवर्क में कार्य करते हैं उसके बीच के संबंधों को कैसे संभालें।
- आपके लक्ष्य में आपकी सहायता करने वाले विशिष्ट श्रोतावर्गों और समूहों को लक्ष्य बनाने के लिए ढाले गए संदेश।

अपनी एडवोकेसी रणनीति की योजना बनाते समय रणनैतिक ढंग से सोचना, इस कार्य को संभालने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। रणनैतिक और व्यवस्थित ढंग से सोचने, यानि चरण-दर-चरण व्यवस्थित और विस्तृत ढंग से यह सोचने कि क्या किया जाना है, से यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि आप प्रत्येक आवश्यक गतिविधि पर ध्यान दें, और इससे दूसरों को आपकी योजनाओं से अवगत कराने और यह दिखाने में भी मदद मिलती है कि वे किस तरह उनमें शामिल हो सकते हैं।

आप कहाँ जाना चाहते हैं, आपको यह लक्ष्य तय करना होगा, और फिर उसके लिए छोटे-छोटे लक्ष्य तय करने होंगे। बिना सोचे-समझे एवं बिना सक्रिय दृष्टिकोण के ऐसा नहीं किया जा सकता है। आप जो बदलाव देखना चाहते हैं उन्हें हासिल करने में मदद के लिए रणनैतिक संदेश आवश्यक और अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये लक्ष्य समूह को ध्यान में रख करबनाये गए हों, और आपके मुद्दों के संबंध में प्रभावी संचार और एडवोकेसी कर सकते हों। इससे व्यापक और बड़े लक्ष्यों को कहीं बेहतर ढंग से आसान कदमों में बाँटने में भी मदद मिलती है।

यह आपको तय करना है कि आपने जो समय-रेखा तैयार की है और आपका जो अंतिम लक्ष्य है उसके अनुसार, आपकी रणनीति पर हर महीने चर्चा एवं समीक्षा उपयोगी रहेगी या हर दो महीनों में एक बार। एडवोकेसी रणनीतियों की डिजाइन और उनका कार्यान्वयन सीधा-सादा नहीं होता है, और आपके आगे बढ़ने के साथ-साथ उनमें बदलाव और सुधार की ज़रूरत पड़ेगी, क्योंकि आप जिस संदर्भ और परिवेश में कार्य करते हैं वे भी बदल सकते हैं। वास्तविक कार्यान्वयन शुरू करने पर आपको कुछ गतिविधियों की समीक्षा करने और उन पर दोबारा काम करने की ज़रूरत पड़ेगी। ऐसा यह सुनिश्चित करने के लिए है कि आप जिस समूह या समुदाय में कार्य कर रहे हैं आप उसके मुद्दों की पूरी शृंखला पर सर्वोत्तम संभव ध्यान दे रहे हों, और किसी को छोड़ नहीं रहे हों, या वास्तविकता पर ध्यान देने में विफल नहीं हो रहे हों।

अपनी एडवोकेसी योजनाओं के विवरण तैयार करने में मदद के लिए टेम्प्लेट का उपयोग करना

अब हम एक टेम्प्लेट का अध्ययन करेंगे; हमारा सुझाव है कि अपनी एडवोकेसी रणनीति तैयार करने और अपनी गतिविधियों की योजना बनाने में आप इस टेम्प्लेट का उपयोग करें। इसमें उस पहेली के हर टुकड़े के उदाहरण हैं जो आपको अपनी रणनीति को आकार देने के लिए तैयार करनी होगी।

- सबसे पहले सबसे ऊपर की पंक्ति में अपने लक्ष्य भरिए - यह वह अंतिम बदलाव है जो आप अपने कार्य के जरिए हासिल करना चाहते हैं।
- इसके बाद, एकदम बायें वाले स्तंभ में अपने उद्देश्य जोड़िए। ऐसे तीन से पाँच उद्देश्य लिखने की कोशिश कीजिए जो आप अपने कार्य के जरिए हासिल करना चाहते हैं।
- प्रत्येक स्तंभ में बायें से दायें काम करते हुए, कुछ विचारों पर अपने समूह में साथ मिलकर विचार-मंथन कीजिए, जैसे कौनसी गतिविधियाँ चाहिए, उन्हें कौन कर सकता है, और प्रत्येक अनुभाग में उन्हें शामिल कीजिए।
- यदि आप अपना जेंडर विश्लेषण पूरा करने में सफल रहे थे, तो अब उसकी मदद लीजिए। वह, और आपने जो भी अन्य शोध एवं विश्लेषण किया हो वे, यह तय करने में आपकी मदद करेंगे कि आपके लक्ष्य कौन हैं, वास्तविक समय-सीमाएँ क्या रहेंगी, और संभव समाधान क्या हो सकते हैं।
- यदि आप अटक जाएँ या आपको और प्रेरणा चाहिए हो तो तालिका में शामिल उदाहरण पढ़ें।

अपनी एडवोकेसी रणनीति में संभावित गतिविधियाँ चुनने में आपकी मदद के लिए यहाँ कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं

1) आपके लक्ष्य या लक्ष्यों की व्यक्तित्व की विशेषताएँ क्या हैं; उनकी पसंद-नापसंद क्या हैं और उन्हें किन चीजों में रुचि है या कौनसी चीजें उन्हें आकर्षित करती हैं? उनके कार्य के बारे में आप क्या जानते हैं और आप उनका ध्यान किस प्रकार आकर्षित कर सकते हैं? इस बारे में सोचिए कि उनका ध्यान खींचने या उनमें रुचि जगाने के लिए पहले कौनसी गतिविधियाँ या युक्तियाँ सफल रही थीं, या यह कि उन तक सीधे पहुँचने का सबसे अच्छा तरीका क्या है। उदाहरण के लिए, यदि आपका लक्ष्य कोई शांत राजनीतिज्ञ है जो बड़े ध्यानाकर्षण या मीडिया को पसंद नहीं करता है, तो बाल विवाह को खत्म करने के लिए कौनसे तरीके सफल हैं, और यह मुद्दा क्यों महत्वपूर्ण है, इससे संबंधित स्पष्ट प्रमाणों वाली एक संक्षिप्त रिपोर्ट उसके लिए ज़्यादा उपयुक्त और प्रासंगिक रहेगी, बजाय इसके कि आप उसके कार्यालय के सामने कोई बड़ा विरोध प्रदर्शन करें या कोई याचिका दायर कर दें।
2) क्या आपके पास अपनी गतिविधियों के लिए बजट है? यदि नहीं, तो जलपान, स्थान के किराये आदि की लागतों वाला कोई कार्यक्रम आयोजित करना अयथार्थवादी होगा। ऐसी चीजों के बारे में सोचें जो आप बिना खर्चे के कर सकते हों : जैसे, मीडिया को शामिल करने में अकसर कोई खर्चा नहीं होता है। या, यदि गतिविधि आवश्यक है, तो किसी साझेदार के साथ मिलकर उसे करने पर विचार करें; इससे खर्चे कम करने में मदद मिल सकती है, या फिर वह साझेदार अतिरिक्त बजट के रूप में सहयोग कर सकता है।
3) इसे देने के लिए सच में आपके पास कितना समय है? इस पर आप सच में कितना समय खर्च कर सकते हैं और आप क्या हासिल करने का लक्ष्य बना रहे हैं इस बारे में स्पष्ट रहिए।

1. एक पूर्ण एडवोकेसी रणनीति टेम्प्लेट का उदाहरण

लक्ष्य : यह एक प्रेरणादायक विवरण है कि आप लम्बे समय में क्या हासिल करना चाहते हैं, यानि वह "बड़ी तस्वीर" जो आप अपने कार्य या अपने हस्तक्षेप के जरिए हासिल करना चाहते हैं।
उदाहरण : एक साल के अंदर दो गाँवों में बाल विवाह में 25% की कमी लाना।

उद्देश्य आप क्या हासिल करना चाहते हैं? वह अंतिम बदलाव क्या है जो आप देखना चाहते हैं?	लक्ष्य आप जो बदलाव देखना चाहते हैं उसे हासिल करने के लिए वे सबसे महत्वपूर्ण लोग कौन हैं जिन्हें आपको लक्ष्य बनाना या प्रभावित करना होगा?	सहयोगी/मित्र आपको किन लोगों के साथ कार्य करना होगा और कौन लोग आपके कार्य में आपकी मदद करेंगे?	गतिविधियाँ प्रत्येक लक्ष्य हासिल करने और सफल होने के लिए आपको कौनसे कदम उठाने होंगे या कौनसे कार्य करने होंगे?	संसाधन अपना लक्ष्य वास्तव में हासिल करने के लिए आपको क्या चाहिए होगा? यदि आपको धन या बजट की ज़रूरत होगी, तो स्पष्ट कीजिए कि आपको कितना धन या बजट चाहिए होगा और वह कहाँ से आएगा।	संभावित जोख़िम इस मुद्दे पर आपके कार्य से कौनसे जोख़िम, नकारात्मक प्रभाव या चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं? इस बारे में भी सोचें कि कौनसे जेंडर मुद्दे शामिल हैं।	समय-सीमाएँ इस बारे में बेहद स्पष्ट रहिए कि कौनसे कदम उठाए जाने हैं, वे किस क्रम में उठाए जाने हैं, और उन्हें कब तक पूरा कर लेना है।	कौन ज़िम्मेदार है? स्पष्ट कीजिए कि किस कार्य विशेष का नेतृत्व कौन करेगा, और वह पूरा हो यह सुनिश्चित करने में उसकी क्या भूमिका है।	सफलता के मानदंड आप कैसे जानेंगे कि आपने अपने लक्ष्य हासिल कर लिए या नहीं, और आपको जो चाहिए उसे हासिल करने के लिए अपनी स्थिति को ट्रैक करने हेतु आपको क्या चाहिए?
बाल विवाह के प्रभावों पर चर्चा के लिए एक रेडियो चर्चा आयोजित कीजिए	• स्थानीय शिक्षा अधिकारी • पुलिस प्रमुख एवं अन्य अधिकारी • समुदाय के लोग	• स्थानीय मीडिया • स्थानीय अध्यापक • पुलिस बल	• विचार पेश करने के लिए स्थानीय रेडियो स्टेशन जाना • रिश्ते के किसी भाई/बहन, जो किसी रेडियो डीजे को जानता/ती हो, से बात करना और उससे सलाह मांगना कि इसे कैसे पेश किया जाए और चर्चा की संरचना क्या हो	• आने-जाने का खर्चा • सुनिश्चित करें कि युवा महिलाएँ कार्यक्रम/पैनल का हिस्सा हों	स्थानीय समुदाय उक्त विचारों के विरोध में है, इसलिए बुजुर्गों को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए बुलाइए	दो महीनों में : फ़रवरी के आख़िर तक पूरा	पीटर : डीजे या रेडियो होस्ट से बात करने के लिए सेलीन : स्क्रिप्ट और बातचीत के मुख्य बिंदु तैयार करने के लिए	रेडियो टॉक शो पूरा होता है

2. आपकी एडवोकेसी रणनीति के लिए टेम्प्लेट : आपके समूहों में उपयोग के लिए

लक्ष्य :

उद्देश्य आप क्या हासिल करना चाहते हैं? वह अंतिम बदलाव क्या है जो आप देखना चाहते हैं?	लक्ष्य आप जो बदलाव देखना चाहते हैं उसे हासिल करने के लिए वे सबसे महत्वपूर्ण लोग कौन हैं जिन्हें आपको लक्ष्य बनाना या प्रभावित करना होगा?	सहयोगी/मित्र आपको किन लोगों के साथ कार्य करना होगा और कौन लोग आपके कार्य में आपकी मदद करेंगे?	गतिविधियाँ प्रत्येक लक्ष्य हासिल करने और सफल होने के लिए आपको कौनसे कदम उठाने होंगे या कौनसे कार्य करने होंगे?	संसाधन अपना लक्ष्य वास्तव में हासिल करने के लिए आपको क्या चाहिए होगा? यदि आपको धन या बजट की ज़रूरत होगी, तो स्पष्ट कीजिए कि आपको कितना धन या बजट चाहिए होगा और वह कहाँ से आएगा।	संभावित जोख़िम इस मुद्दे पर आपके कार्य से कौनसे जोख़िम, नकारात्मक प्रभाव या चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं? इस बारे में भी सोचें कि कौनसे जेंडर मुद्दे शामिल हैं।	समय-सीमाएँ इस बारे में बेहद स्पष्ट रहिए कि कौनसे कदम उठाए जाने हैं, वे किस क्रम में उठाए जाने हैं, और उन्हें कब तक पूरा कर लेना है।	कौन ज़िम्मेदार है? स्पष्ट कीजिए कि किस कार्य विशेष का नेतृत्व कौन करेगा, और वह पूरा हो यह सुनिश्चित करने में उसकी क्या भूमिका है।	सफलता के मानदंड आप कैसे जानेंगे कि आपने अपने लक्ष्य हासिल कर लिए या नहीं, और आपको जो चाहिए उसे हासिल करने के लिए अपनी स्थिति को ट्रैक करने हेतु आपको क्या चाहिए?

अपना संदेश तैयार करना

संदेश आपके लक्ष्य श्रोतावर्ग को बताता है कि उन्हें आपके लक्ष्य को हासिल करने में मदद देने के लिए क्या करना चाहिए : उनसे क्या करने को कहा जा रहा है, वह किए जाने योग्य क्यों है, और शामिल होने का सकारात्मक प्रभाव क्या होगा।

संदेश में ये चीजें होनी चाहिए:

- आप क्या हासिल करना चाहते हैं।
- आप उसे क्यों हासिल करना चाहते हैं (और दूसरों को भी उसे हासिल करने की चाहत क्यों होनी चाहिए)।
- आपके पास उसे हासिल करने की क्या योजना है।
- आप अपने श्रोतावर्ग से क्या विशिष्ट कार्य करवाना चाहते हैं।

संदेश ऐसा हो जो :

- लोगों को समझा-बुझाकर राज़ी करे और प्रेरित करे।
- मुद्दे के बारे में जागरुकता फैलाए।
- समर्थन जुटाने के लिए अन्याय की समझ पैदा करे : उन्हें बताइए कि उन्हें परवाह क्यों होनी चाहिए।
- मीडिया और अपने समुदाय के महत्वपूर्ण प्रभावकों में रुचि जगाए और उन्हें शामिल करे।
- प्रभावी हो और उस "संचार के हो-हल्ले" से अलग दिखे जो लोगों पर रोज़ बरसता है।

संदेश देना और अपनी एडवोकेसी के बारे में कैसे बात करें

अपनी एडवोकेसी रणनीति तैयार करने के बाद, मुख्य संदेशों की पहचान करना महत्वपूर्ण है। ये छोटे-छोटे कथन होते हैं जो आपके मिशन और लक्ष्य का, जो बदलाव आप देखना या हासिल करना चाहते हैं उसका, और आप उसे कैसे हासिल करना चाहते हैं इस बात का, वर्णन करते हैं। संदेश आपके लक्षित श्रोतावर्ग को साफ़-साफ़ बताता है कि मुद्दा क्या है, उसे हासिल करने में मदद के लिए उनसे क्या करने को कहा जा रहा है/उन्हें क्या करना होगा, वह किए जाने योग्य क्यों है, और उस कार्य का सकारात्मक प्रभाव क्या होगा।

आपकी एडवोकेसी रणनीति को एकसाथ बनाए रखने के लिए एक शक्तिशाली और व्यापक कथन या संदेश महत्वपूर्ण होता है। यदि आपके संदेशों की संख्या बहुत अधिक हुई, या वे अस्पष्ट या बहुत जटिल हुए, तो हो सकता है कि वे आपके लक्षित श्रोतावर्ग का ध्यान आकर्षित न कर पाएँ या लंबे समय तक टिकने वाला प्रभाव न डाल पाएँ। ज़रूरी नहीं कि वह बस एक वाक्य ही हो, पर कोशिश कीजिए कि वह संक्षिप्त हो और केवल मुद्दे की बात करता हो, ताकि आपके लक्षित वर्ग का ध्यान उस पर बना रहे।

आपके संदेश ऐसे होने चाहिए जो :

- लोगों को समझा-बुझाकर राज़ी करे और प्रेरित करे।
- मुद्दे के बारे में जागरुकता फैलाए।
- आपके मुद्दे के इर्द-गिर्द एक भावनात्मक एहसास बनाते हों। उदाहरण के लिए, लोगों को अन्याय से, या बाल विवाह के बुरे कारणों से अवगत कराने से समर्थन जुटाने में मदद मिलेगी। आपको उन्हें बताना होगा कि उन्हें परवाह क्यों होनी चाहिए।
- मीडिया और अपने समुदाय के महत्वपूर्ण प्रभावकों में रुचि जगाए और उनमें शामिल होने की चाह पैदा करे।
- प्रभावी हो और उस "संचार के हो-हल्ले" से अलग दिखे जो लोगों पर रोज़ बरसता है। हर कोई समाचार और सभी प्रकार के मीडिया के रूप में बहुत सारी चीजों के संपर्क में आता है - कोशिश कीजिए कि आपका संदेश साधारण पर शक्तिशाली हो जो बाकियों से अलग दिखे।

संदेश में ये चीजें होनी चाहिए :

- एक मूल कथन जो आपका केंद्रीय विचार या समस्या का कारण समझाता हो। यह दिखाता है कि बदलाव इतना महत्वपूर्ण क्यों है और आपका अंतिम लक्ष्य क्या है। आपका मुख्य लक्ष्य अंततः यह है कि आप अपने एडवोकेसी के जरिए क्या हासिल करना चाहते हैं, इसलिए सभी हितधारकों को उसे साफ़ और सीधे तौर पर समझना और हासिल करना होगा।
- प्रमाणों के कुछ उदाहरण जोसमझने-में-आसान तथ्यों और आँकड़ों द्वारा कथन का समर्थन करें।
- ऐसी सहज भाषा प्रयोग कीजिए जो आपके मुख्य लक्ष्य वर्ग को आकर्षित करे। उदाहरण के लिए, जिस परिस्थिति और उसके प्रभावों की ओर आप ध्यान आकर्षित कर रहे हैं उसका कोई वास्तविक जीवन से उदाहरण देना लोगों का ध्यान आकर्षित करने और लोगों को उसे समझने में मदद देता है, क्योंकि इससेआपके मुद्दे पर संचार करते समय एक इंसानी चेहरा जुड़ जाता है।
- कौन से कदम उठाए जाने होंगे, और बदलाव में योगदान देने के लिए आपका श्रोतावर्ग क्या कर सकता है, ताकि समस्या के समाधान तक पहुँचा जा सके।

प्रभावी संदेश

प्रभावी संदेश:

- आप जो बदलाव लाना चाहते हैं उसे सारांश में बताता है।
- संक्षिप्त और सरल होता है।
- श्रोतावर्ग के अनुरूप ढला हुआ होता है।
- में आप अपना लक्ष्य/उद्देश्य कब तक हासिल करना चाहते हैं इस बात की समय सीमा होती है।
- में यह बात शामिल होती है कि बदलाव महत्वपूर्ण क्यों है।
- याद रखने योग्य होता है।
- में भावनात्मक और तार्किक संदेश होता है।
- यह चर्चा करनी और व्यवस्थित एवं विस्तृत ढंग से सोचना ज़रूरी है कि कौनसे संदेश सबसे प्रभावी रहेंगे।
- आप जिन लक्ष्य वर्गों से जुड़ना चाहते हैं उन तक अपना संदेश पहुँचाने में आपको विभिन्न प्रकार की मीडिया के साथ कार्य करने से बहुत मदद मिलेगी।

अच्छा संदेश कैसे बनता है?

संचार, या आप अपना संदेश सामने वाले तक कैसे पहुँचाते हैं, आपके एडवोकेसी कार्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। इस बारे में व्यवस्थित और विस्तृत ढंग से सोचना ज़रूरी है कि आपको लोगों को अपनी बात पर राज़ी करने के लिए कौनसे संदेश सबसे प्रभावी रहेंगे, विशेष रूप से आपके विभिन्न लक्ष्य समूहों के लिए। विचार-मंथन करने और आपस में चर्चा करने से यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि आपकी टीम या समूह के हर सदस्य के पास समान जानकारी और समान समझ हो - साथ मिलकर कार्य करना शक्तिशाली संचार रचने में काफ़ी मदद करता है, विशेष रूप से काफ़ी चुनौतीपूर्ण गतिविधियों में, जैसे अपने संदेश बनाना।

प्रभावी संदेश:

- आप जो बदलाव लाना चाहते हैं उसे सारांश में बताता है।
- संक्षिप्त और सरल होता है।
- श्रोतावर्ग के अनुरूप ढला हुआ होता है।
- में आप अपना लक्ष्य/ उद्देश्य कब तक हासिल करना चाहते हैं इस बात की समय सीमा होती है।
- में यह बात शामिल होती है कि बदलाव महत्वपूर्ण क्यों है।
- याद रखने योग्य होता है।
- में भावनात्मक और तार्किक संदेश होता है।
- यह चर्चा करनी और व्यवस्थित एवं विस्तृत ढंग से सोचना ज़रूरी है कि कौनसे संदेश सबसे प्रभावी रहेंगे।

शक्तिशाली संदेशों की रचना कैसे की जाए इस बारे में नीचे प्लान इंटरनेशनल टूलकिट से कुछ उपयोगी सुझाव दिए जा रहे हैं। इससे कार्यकर्ता इस बारे में सोचने को प्रोत्साहित होंगे कि अच्छे संदेश से आपको उन समूहों, जिन्हें आप लक्षित कर रहे हैं या आपको जिन्हें संलग्न करना है, से जुड़ने में किस प्रकार मदद मिलेगी। लोग आपके उद्देश्य पर सोचें और कदम उठाएँ इसके लिए आपको तीन क्षेत्रों को लक्ष्य बनाना चाहिए।

- उनका दिमाग़ : यह वह बौद्धिक और मेधावी संदेश है जिससे वे एक ऐसी चीज के बारे में सोचते, से अवगत होतेया को जानते हैं जिसके बारे में वे पहले नहीं जानते थे, और साथ में उस नकारात्मक रुझान के दुष्परिणामों और प्रभावों के बारे में भी जान जाते हैं।
- उनका दिल : यह अधिक भावनात्मक और व्यक्तिगत है, और इससे उन्हें कुछ ऐसा इतने ज़ोरों से महसूस होता है कि उनमें कदम उठाने की चाह जगती है।
- और आख़िर में उनके हाथ : यह उन्हें सरल भाषा और तरीकों में दिखाता है कि वे बदलाव में योगदान देने और आपके उद्देश्य में मदद करने के लिए क्या कर सकते हैं या क्या कदम उठा सकते हैं।
- हालांकि यह न भूलें कि - संदेश हमेशा संक्षिप्त और केवल मुद्दे पर केंद्रित होने चाहिए।

मीडिया के साथ कार्य करना

किसी भी अच्छे एडवोकेसी या अभियान पहल के लिए मीडिया के साथ कार्य करना आवश्यक होता है। इसमें सभी प्रकार के मीडिया भी शामिल होते हैं - अधिक परंपरागत रूपों के साथ-साथ नए प्लेटफ़ॉर्म भी, जैसे सोशल मीडिया। आप जिन लक्ष्य वर्गों से जुड़ना चाहते हैं उन तक अपना संदेश पहुँचाने में मदद के लिए मीडिया अत्यंत महत्वपूर्ण होगा, और आपको अपना संदेश कहीं अधिक लोगों तक पहुँचाने में मदद देगा। निम्नांकित पर विचार करें :

- संबंधित मीडिया संपर्कों, जिनमें युवा-केंद्रित रेडियो स्टेशन और टीवी चैनल और हस्तियाँ शामिल हैं, की सूची बनाना - वे शक्तिशाली सहयोगी सिद्ध हो सकते हैं।
- अपने मुद्दे के बारे में लेख लिखना और उन्हें अपने स्थानीय या राष्ट्रीय समाचार-पत्रों को भेजना।
- सामुदायिक रेडियो कार्यक्रमों पर बोलना भी अपना संदेश लोगों तक पहुँचाने और अपनी आवाज़ सुनाने का एक और महत्वपूर्ण तरीका है।
- अपनी आवाज़ बढ़ाने के लिए अपने खुद के मंच बनाना : इसमें सार्वजनिक थिएटर प्रदर्शन, दीवारों पर चित्रकारी, स्व-प्रकाशित समाचार-पत्र या ऑनलाइन ब्लॉग की रचना आदि गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं। आपके लिए बहुत से विकल्प उपलब्ध हैं।
- इस बारे में थोड़ा शोध कीजिए कि अन्य संगठन किस प्रकार सफल संदेश और अभियान बनाने में सफल हुए हैं।

मॉड्यूल 4: साथ मिलकर हम अधिक शक्तिशाली हैं!

सत्र 4.1: सक्रियता का जोख़िम भरा पहलू

उद्देश्य :

- कठिन विषयों पर कार्य करने के लाभ और चुनौतियाँ समझना।
- यह वर्णन करना कि कहीं बड़ी प्रक्रियाओं, जैसे विस्तृत राष्ट्रीय एजेंडाओं, को प्रभावित करने के लिए स्थानीय कार्यों का उपयोग कैसे किया जाए।
- जोख़िम विश्लेषण करने का अभ्यास करना और यह समझना कि वह महत्वपूर्ण क्यों है।

सत्र की रूपरेखा :

- युवा एडवोकेट के लिए मौजूद जोख़िम की अवधारणा से परिचय
- जोख़िमों का आंकलन और उनकी रोकथाम कैसे करें

कार्यसूची

1	परिचय
2	ऊर्जावान बनाने वाली गतिविधि
3	प्रस्तुति : जोख़िम, जोख़िमों का प्रबंधन करना और युवा कार्यकर्ताओं का संरक्षण करने से हमारा क्या अर्थ है
4	समूह कार्य : जोख़िम का आंकलन करना
5	प्रस्तुति : जोख़िम आंकलन और, हम इसे कैसे करते हैं
6	समूह कार्य : जोख़िम
7	प्रस्तुति : साझेदारी की शक्ति - बदलाव के लिए साथ मिलकर कार्य करना
8	समूह कार्य : साथ मिलकर कार्य करने के लाभ और चुनौतियाँ
9	निष्कर्ष

जोख़िम, जोख़िमों का प्रबंधन करना और युवा कार्यकर्ताओं का संरक्षण करने से हमारा क्या अर्थ है?

इस सत्र का लक्ष्य वयस्क-नेतृत्व के क्षेत्रों में जुड़ने वाले युवा लोगों के लिए संभावित रूप से मौजूद चुनौतियों और अवसरों से, और उन संभावित कठिनाइयों से परिचय कराना है जिनसे आपका सामना, बाल विवाह जैसे जटिल मुद्दों पर युवा कार्यकर्ताओं के रूप में कार्य करने के दौरान हो सकता है।

युवा लोगों के पास, उनके जीवन को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर अनूठी और महत्वपूर्ण राय तथा विचार होते हैं। आपके लिए क्या सबसे अच्छा है यह जानने के लिए आप और आपके साथी ही सबसे अच्छी स्थिति में हैं, और आप लोग ही मुद्दों को कैसे हल किया जाए इस बारे में बेहद रचनाशील भी हैं। इसलिए, युवाओं के रूप में आपको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने वाले निर्णय उनसे नज़दीकी परामर्श के साथ लिए जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त, जब युवाओं की बात सुनी जाती है और वे समाज में अग्रणी भूमिका निभाते हैं, तो आप ऐसी योग्यताएँ और कौशल विकसित कर सकते हैं जो आपके आत्मसम्मान, कुशल-क्षेम और संभावनाओं को बेहतर बनाने में मदद देते हैं। लोग आपकी बात सुनें और आपको और आपके विचारों को गंभीरता से ले रहे हों यह सुनिश्चित करने में आपको भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है, वह इसलिए क्योंकि आप बेहतर भविष्य की मांग करने वाले एक शक्तिशाली युवा कार्यकर्ता के रूप में मजबूत हैं!

परन्तु युवा कार्यकर्ता होने के साथ कुछ संभावित बाधाएँ और चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं, और यह हमेशा ही आसान कार्य नहीं होता है। अकसर वयस्कों के पास युवाओं के ऊपर नियंत्रक शक्तियाँ होती हैं और अंततः वे ही उनके लिए निर्णय लेते हैं। कई लोग आपके साथ कार्य करने के प्रति इसलिए बेपरवाही दिखा सकते हैं क्योंकि वे आपसे इसलिए "बेहतर जानते" हैं क्योंकि आप इतने छोटे हैं कि आपकी बात उनकी समझ से बाहर होती है। नतीजा यह होता है कि अकसर युवाओं को बराबर का साझेदार नहीं माना जाता है। यह एक दुखद वास्तविकता है, और एक ऐसी वास्तविकता है जिसे बदलने के लिए हमें मेहनत करनी होगी। अपनी आवाज़ सुनाने के लिए एक जगह बनाने, और मुद्दे पर अच्छा-ख़ासा शोर मचाने में आपकी मदद के लिए कुछ चरण मौजूद हैं।

अपनी आवाज़ सुनाने की जगह बनाने के लिए आपको अतिरिक्त कोशिशों की ज़रूरत पड़ने वाली है। बाहर कौनसे संभावित जोख़िम या चुनौतियाँ हैं और आप उन्हें किस प्रकार रोक या घटा सकते हैं यह जानकर, आप खुद का बचाव कर सकते हैं, सशक्त महसूस कर सकते हैं, और एक युवा कार्यकर्ता के रूप में सफल हो सकते हैं। आपके पास सरल, लेकिन प्रभावी संदेश हों, और अपने एडवोकेसी के लिए एक स्पष्ट योजना हो यह सुनिश्चित करने से आप जान जाएंगे कि आप दुनिया में जो बदलाव देखना चाहते हैं उसे हासिल करने के लिए आपको कौनसे कदम उठाने हैं, किन्हें लक्ष्य बनाना है, और कौनसी गतिविधियाँ करनी हैं। एक नेटवर्क या साझेदारी के रूप में साथ मिलकर कार्य करके, आप एक मज़बूत और एकजुट आवाज़ स्थापित करने में मदद कर सकते हैं। यही कारण है कि हमें आशा है कि यह प्रशिक्षण आपको एक अद्भुत युवा कार्यकर्ता बनने के कुछ महत्वपूर्ण साधन और सुझाव देखने में मदद करेगा!

जोख़िम

जोख़िम एक ऐसी चीज है जो किसी व्यक्ति को क्षति, हानि या ख़तरे के संपर्क में लाता है। आवश्यक नहीं कि हर किसी के लिए जोख़िम समान हों। सभी व्यक्ति अलग-अलग जोख़िमों का सामना करते हैं और उनका अनुभव अलग-अलग स्तरों पर कर सकते हैं, इसमें विशेष रूप से जटिल मुद्दे, जैसे लिंग, आयु, अशक्तता एवं अन्य मुद्दे शामिल हैं। किसी भी पहल के जोख़िम और संभावित जोख़िमों का आंकलन करना महत्वपूर्ण है - यह पहल कोई गतिविधि, जैसे कोई मीटिंग, से लेकर, बाल विवाह के हल की दिशा में कार्य करने वाली पूरी-की-पूरी परियोजना तक, कुछ भी हो सकती है।

जब आप अपनी गतिविधियों की योजना बनानी शुरू करें, तो यह महत्वपूर्ण है कि आप पहले से ही एक जोख़िम विश्लेषण कर लें ताकि आप उस संदर्भ या परिवेश को पूरी तरह समझ लें जिसमें आप कार्य कर रहे हैं, और उन संभावित चुनौतियों को भी समझ लें जो आपके सामने आ सकती हैं। जोख़िम वह स्थिति है जो किसी चीज या किसी व्यक्ति को ख़तरे, क्षति या हानि के संपर्क में ले आती है। बाल विवाह के विरुद्ध कार्य करने वाले एक कार्यकर्ता के रूप में, आप जड़ें जमाए हुए सांस्कृतिक विश्वासों, मानदंडों और मान्यताओं को चुनौती देंगे। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि आप समय निकाल कर संभावित जोख़िमों के विस्तृत विवरण तैयार करें, और उन्हें या उनसे आप पर, आपके साथियों पर या आपके कार्य पर पड़ सकने वाले नकारात्मक प्रभाव को सीमित करने के तरीके तय करें।

सोचने के लिए कुछ प्रश्न :

- अपने समुदाय में बाल विवाह ख़त्म करने का एडवोकेट बनते समय आपमें से प्रत्येक किन चीजों से सामना होने की अपेक्षा रखता है?
- आप किन चीजों को व्यक्तिगत जोख़िम के रूप में देखते हैं?
- आपके विचार में आप इन्हें किस प्रकार घटा या रोक सकते हैं?
- आप किस प्रकार एक-दूसरे का सहयोग कर सकते हैं?

आपके सामने आ सकने वाले संभावित जोख़िम...

युवा कार्यकर्ताओं के लिए :

- सामुदायिक, धार्मिक या परंपरागत नेताओं की ओर से प्रतिघात और नाराज़गी।
- परिवार के सदस्यों का आपके विचार नहीं समझना और, आप एक ऐसी प्रथा, जो आमतौर पर काफ़ी हद तक उनकी परंपराओं का एक हिस्सा है, को उनसे रुकवाने की कोशिश कर रहे हैं इसलिए उनका आपसे नाराज़ होना।
- बाल विवाह से लड़ने में समय बिताने से अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियों, जैसे आपकी शिक्षा, या नौकरी ढूंढने, से आपका ध्यान हट सकता है, और इससे आपके जीवन पर, और महत्वपूर्ण कार्य करने की आपकी क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

युवा, अविवाहित लड़कियों के लिए:

- माता-पिता द्वारा जबरन ब्याह दिए जाने का जोख़िम बढ़ना।
- जब वे असमानता को पहचानेंगी और अपने समुदाय में तत्काल बदलाव देखना चाहेंगी, पर अंततः ऐसा करने के लिए खुद को शक्तिहीन पाएंगी तो मन में निराशा उत्पन्न होगी।
- लड़कियों का जबरन विवाह का विरोध नहीं कर पाना और सहायता पाने के लिए कोई विकल्प या सेवा का नहीं होना।

विवाहित युवा महिलाओं के लिए :

- पतियों से संभावित दुर्व्यवहार (यह शाब्दिक, शारीरिक या यौन हो सकता है), विशेष रूप से तब जब वे अपने अधिकारों के बारे में और जानकार बन जाएंगी और इस प्रथा के विरुद्ध अधिक खुलकर बोलेंगी।
- समुदाय की ओर से उन लड़कियों और युवा महिलाओं की आलोचना या उनसे प्रतिशोध जो खुलकर इस बात पर प्रश्न उठाती हैं कि वे विवाहित क्यों हैं।
- कइयों को अपनी क्षमता में एडवोकेसी गतिविधियों में मदद करने के साथ-साथ घर पर परिवार की मांगों और अपेक्षाओं के साथ संतुलन बैठाने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा।
- यदि वे अपने अनुभव समूह के साथ शेयर करती हैं तो हिंसा के सदमे को फिर से अनुभव करने लगेंगी। यदि वे परिणास्वरूप किसी सहयोग सेवा तक पहुँचने में असमर्थ हैं तो यह विशेष रूप से एक जोख़िम है।
- यदि सहायता मांगने के बाद उन्हें पूरी तरह सहायता नहीं मिलती है तो अपेक्षाओं का विफल होना।
- यदि कोई उनके पद/उनकी स्थिति का विरोध करता है, या बदलाव की मांग करने वाले कार्यकर्ता की उनकी नई भूमिका से ख़तरा महसूस करता है, तो उससे भी संभावित ख़तरा मौजूद हो सकता है।

जोख़िम

- जोख़िम वह स्थिति है जो किसी चीज या किसी व्यक्ति को ख़तरे, क्षति या हानि के संपर्क में ले आती है। जोख़िम विश्लेषण करके और सही उपाय करके इससे बचा जा सकता है। बाल विवाह कार्यकर्ता होने के नाते, आप अकसर गहरी जड़ों वाले सांस्कृतिक विश्वास तंत्रों को और सामुदायिक मान्यताओं को चुनौतियाँ देंगे, और वे आपके लिए एक जोख़िम खड़ा करेंगे।
- जोख़िम के दो भाग होते हैं: कुछ ग़लत होने की संभावना, और यदि ऐसा होता है तो होने वाले दुष्परिणाम।

हो सकता है कि यह डरावना लगे या आपको अनिर्णय की स्थिति में पहुँचा दे, पर डरिए मत! बदलाव के एक युवा एडवोकेट के रूप में आप कई तरीकों से खुद को सुरक्षित रख सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र के पास बेहतर भविष्य की मांग करने वाले कार्यकर्ताओं के संरक्षण के लिए कई संधिपत्र हैं, जिनमें संघ बनाने की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार शामिल हैं। आप यह जानते हों कि कौनसे कानून और नीतियाँ आपको कानूनी संरक्षण दे सकते हैं यह सुनिश्चित करने के लिए अपने देश के संविधान और कानूनों का अध्ययन कीजिए। एक समूह के रूप में साथ मिलकर कार्य करने से, बड़ी संख्या में एकजुटता दिखाकर आपकी आवाज़ को और मज़बूत तथा और तेज़ बनाने में मदद मिलती है; एकजुटता दिखाना एक-दूसरे की सुरक्षा करने का सच में एक महत्वपूर्ण तरीका है। जिन लोगों के साथ आप कार्य करते हैं उनसे या अपने समुदाय से सहायता मांगना मत भूलिए! जोख़िमों से खुद निपटने के मामले में आप अकेले नहीं हैं।

जोख़िम आंकलन और, हम इसे कैसे करते हैं

जोख़िम आंकलन एक साधन है जिससे आपको आपके सामने आ सकने वाले संभावित जोख़िमों और चुनौतियों, तथा उनके प्रभावों के बारे में - व्यवस्थित और सुविचारित एवं विस्तृत ढंग से - सोचने में मदद मिलती है। इससे आपको इस बारे में विस्तार से सोचने में भी मदद मिलेगी कि आप इन संभावित जोख़िमों को किस प्रकार सीमित कर सकते हैं और उनकी रोकथाम के लिए या उन्हें रोकने के लिए आप क्या कर सकते हैं। विवरण के लिए नीचे तालिका देखें, वहाँ इसे पूरा कैसे करें इस बात का एक उदाहरण भी दिया गया है।

जोख़िम आंकलन

- जोख़िम आंकलन रजिस्टर संभावित जोख़िमों और उनके प्रभावों के बारे में विस्तार से सोचने का एक साधन है।
- आपको किन संभावित जोख़िमों का सामना करना पड़ सकता है इसे समझने में आपकी मदद के लिए हमने आपकी प्रतिभागी मार्गदर्शिका में जो जोख़िम आंकलन टेम्प्लेट का उदाहरण दिया है उसे प्रयोग कीजिए। सबसे बायें स्तंभ से आरंभ कीजिए, और पूछिए कि आपकी रणनीति योजना की प्रत्येक गतिविधि के लिए आपके पास कौनसे संभावित जोख़िम हैं। वापस अपनी रणनीति योजना का भी संदर्भ लीजिए।
- बारी-बारी से अन्य चार स्तंभों पर चर्चा करके उन्हें पूरा कीजिए।
- किस जोख़िम के होने की संभावना अधिक है, और कौनसा जोख़िम अन्य से अधिक गंभीर है, इन बातों का आंकलन करके जोख़िमों को प्राथमिकता के क्रम में रखिए; अधिक संभावना और अधिक गंभीरता वाले जोख़िमों पर आपको प्राथमिकता से फ़ोकस करना चाहिए।

यदि जोख़िम अधिक है और संभावित गंभीरता तथा प्रभाव भी अधिक हैं (जैसे यदि शारीरिक या मौखिक दुर्व्यवहार या चोट की संभावना अधिक है) तो आगे मत बढ़िए। तब भी जब ऐसी कोई सहयोग सेवा और/या साझेदार संगठन न हो जिनसे आप सहयोग मांग सकते हों।

1. जोख़िम रजिस्टर का उदाहरण

संभावित जोख़िम/ ख़तरा?	क्या हो सकता है?	आप जोख़िम कैसे सीमित कर सकते हैं?	इससे बचने के लिए कौन ज़िम्मेदार है?	उपाय कब किए जाने हैं?
जैसे, समुदाय की ओर से प्रतिघात।	धार्मिक नेता आपको नकारता है, या बहुत आक्रामक है।	बिंदुओं पर स्पष्ट रूप से, और गुस्से या प्रतिशोध के बिना चर्चा करने के लिए एक सुरक्षित, और खुला संवाद स्थल बनाइए। उदाहरण के लिए, यह किसी रेडियो शो का भाग हो सकता है। जिन लोगों द्वारा समस्याएँ खड़ी किए जाने की संभावना है उनसे शो से पहले बात कीजिए।	होप और जेकब	शो से एक सप्ताह पहले।

2. अब आपकी बारी है

संभावित जोख़िम/ ख़तरा?	क्या हो सकता है?	आप जोख़िम कैसे सीमित कर सकते हैं?	इससे बचने के लिए कौन ज़िम्मेदार है?	उपाय कब किए जाने हैं?

इस टूल का उपयोग करने के लिए आपको:

- किसी भी गतिविधि की योजना बनाने से काफ़ी पहले जोख़िम आंकलन या रजिस्टर बनाना शुरू कर देना चाहिए।
- आदर्श रूप से, एक समूह के रूप में जोख़िमों पर विचार-मंथन करना चाहिए, ताकि सुनिश्चित हो सके कि आपने प्रत्येक समूह के सामने आ सकने वाली हर संभावना को कवर कर लिया हो।
- सबसे बायें स्तंभ से आरंभ कीजिए, और पूछिए कि आपकी रणनीति योजना की प्रत्येक गतिविधि के लिए आपके पास कौनसे संभावित जोख़िम हैं।
- अन्य चार स्तंभों पर चर्चा करके उन्हें पूरा कीजिए।
- किस जोख़िम के होने की संभावना अधिक है, और कौनसा जोख़िम अन्य से अधिक गंभीर है, इन बातों का आंकलन करके जोख़िमों को प्राथमिकता के क्रम में रखिए।

आपको आगे नहीं बढ़ना चाहिए यदि :

- जोख़िम की संभावना और संभावित गंभीरता तथा प्रभाव अधिक हैं (उदाहरण के लिए, यदि शारीरिक या मौखिक दुर्व्यवहार या चोट की अधिक संभावना है)।
- ऐसी कोई सहयोग सेवा और/या साझेदार संगठन नहीं है जिससे आप सलाह और सहयोग मांग सकते हों।

समकक्ष/सहकर्मी शिक्षकों या समुदायों में पहुँच-प्रसार के लिए ज़िम्मेदार व्यक्तियों के विचार हेतु प्रश्न

1) बाल विवाह के प्रति स्थानीय लोगों के रवैये क्या हैं?
2) लड़कियों, लड़कों, युवा महिलाओं और पुरुषों के लिए मौजूदा भूमिकाएँ, मानदंड और रूढ़ियाँ क्या हैं?
3) आपका हस्तक्षेप समुदाय के विभिन्न लोगों को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है?
4) आपके कार्य का विरोध कौनसे (व्यक्ति या समूह) कर सकते हैं?
5) इसे संभालने की आपकी रणनीति क्या है?

जोख़िम आंकलन के लिए परिस्थिति का उदाहरण

सियेरा लियोन के छः युवाओं (दो लड़कियाँ और चार लड़के) के एक समूह ने अपने देश में बाल विवाह के प्रभावों के बारे में जागरुकता फैलाने का लक्ष्य रखने वाली एक परियोजना तैयार की है। ये छः युवा वह मुख्य टीम हैं जिसने परियोजना विकसित की है और वे एक अन्य युवा कार्यकर्ता की मदद के साथ इसके प्रबंधन के लिए ज़िम्मेदार हैं। समूह एक ऐसे समुदाय में जा रहा है जहाँ वह पहले कभी नहीं गया है, वह वहाँ पर युवा लड़कियों और लड़कों के साथ बाल विवाह की रोकथाम के बारे में जागरुकता फैलाने के कुछ ज़मीनी प्रयास करने जा रहा है। वे जिस इलाके में जा रहे हैं वह बहुत दूर-दराज का इलाका है और वहाँ के समुदाय का बाहरी संगठनों के साथ कोई ख़ास संपर्क नहीं रहा है। वे जिस महीने में जा रहे हैं उस महीने में उस इलाके का मौसम भी बहुत ख़राब रहता है। एक दानदाता, समूह के साथ उनका कार्य देखने के लिए समुदाय से मिलने उनके साथ जा रहा है, और वह एक रिपोर्ट तैयार करेगा।

साझेदारी की शक्ति - बदलाव के लिए साथ मिलकर कार्य करना

अपने कार्य के, और एक युवा कार्यकर्ता के रूप में अपने जोख़िमों या चुनौतियों को सीमित करने का एक महत्वपूर्ण तरीका यह है कि आपके समान मुद्दों पर कार्य कर रहे लोगों को ढूंढिए और उनसे हाथ मिलाकर अपनी आवाज़ और मज़बूत बनाइए। गठबंधन या साझेदारी, अलग-अलग संगठनों के लोगों का समूह, या किसी समुदाय के अंदर का समूह होता है जो एक शेयर लक्ष्य को हासिल करने के उद्देश्य से साथ कार्य करने के लिए एकसाथ जुड़ते हैं। इनका गठन सीमित या असीमित समय के लिए होता है, और इनके आकार भी अलग-अलग हो सकते हैं। ये बहुत से लोगों को प्रभावित करने वाले किसी विशाल लक्ष्य पर कहीं अधिक लोगों का ध्यान खींचने और कहीं बड़े कदम उठाना संभव बनाने के लिए अस्तित्व में आते हैं। आमतौर पर इनका प्रभाव अलग-अलग संगठनों से अधिक होता है क्योंकि वे कहीं अधिक लोगों तक पहुँच सकते हैं, कहीं अधिक संसाधनों तक पहुँच सकते हैं, और वे कई अलग-अलग परिप्रेक्ष्य एक साथ लाते हैं। अकसर उनका नेतृत्व किसी सह-संयोजक और/या एक मूल कार्यकारी (कोर एक्ज़ीक्यूटिव) टीम द्वारा किया जाता है। हमारा मानना है कि जब आप साथ मिलकर कार्य करते हैं तो आपकी आवाज़ कहीं अधिक तेज़ और मज़बूत होती है।

गठबंधनों के साथ या समूहों में कार्य करना

गठबंधन बनाना, आपके जैसे समान लक्ष्य वाले ऐसे संगठनों या लोगों के साथ संबंध बनाने की प्रक्रिया है जो इस शेयर विज़न को हासिल करने के लिए आपके साथ कार्य करेंगे। समान लक्ष्यों की ज़िम्मेदारी शेयर करने के लिए संगठनों हेतु मंच तैयार करने वाले गठबंधनों के जरिए, एडवोकेसी कार्य की ताक़त में अच्छी-ख़ासी वृद्धि की जा सकती है। एक गठबंधन के रूप में संगठित होना, कार्यकर्ताओं की आवाज़ें और तेज़ बनाने का एक महत्वपूर्ण रणनैतिक कदम है, और यह आपके लक्ष्यों, जैसे कि वे जो निर्णय लेते हैं, पर और भी अधिक दबाव डालने में मदद करता है।

साथ मिलकर कार्य करने के लाभों में शामिल हैं :

- जानकारी, कौशल, अनुभव, सामग्री, परस्पर सहयोग के अवसर आदि का आदान-प्रदान।
- सामूहिक आवाज़ जो एक संयुक्त बल के रूप में अपनी बात कह सकती है और संदेशों को और भी दूर-दूर तक फैला सकती है।
- पहले से बड़े नेटवर्क और संपर्क : आप अकेले की तुलना में साथ मिलकर कहीं अधिक चीजें हासिल कर सकते हैं।
- निर्णयकर्ताओं या आपके मुख्य लक्ष्यों तक पहले से अधिक पहुँच।
- मानव संसाधन और वित्तीय संसाधनों तक पहले से अधिक पहुँच।
- उन सदस्यों के लिए सुरक्षा जो अकेले कदम उठाने में शायद अक्षम हों, विशेष रूप से तब जब वे किसी विरोधी या कठिन परिवेश में कार्य कर रहे हों।
- प्रयासों के अनावश्यक दोहराव में कमी और दक्षता में वृद्धि।
- बेहतर साख, दबाव और प्रभाव।
- विविधता, परिप्रेक्ष्य को विस्तार देकर और नवाचार लाकर अभियान को और मज़बूत बना सकती है। यह अलग-अलग प्राथमिकताओं और रुचियों वाले कहीं बड़े जनसंख्या आधार को आकर्षित करके पहुँच-प्रसार में भी सहायता कर सकती है।
- व्यक्तियों और संगठनों का व्यक्तिगत एवं पेशेवर विकास: सहकर्मी सहयोग, प्रोत्साहन, प्रेरणा, और पेशेवर मान्यता/सम्मान।

समूह में कार्य करने के साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी होती हैं :

- यदि गठबंधन का कार्य सफल नहीं हुआ तो उनके सदस्य संगठनों की प्रतिष्ठा पर असर।
- स्वायत्तता की हानि।
- हितों के टकराव।
- संसाधनों का दोहन।
- अलग-अलग दिशाओं में जाते विचार, जो निर्णय लेने की प्रक्रिया और कार्यान्वयन को कमज़ोर या धीमा बनाते हैं।

इन संभावित चुनौतियों के बावजूद, गठबंधन में कार्य करने के लाभों का पलड़ा आमतौर पर चुनौतियों से भारी ही बैठता है क्योंकि ये लाभ, आपकी सामूहिक शक्ति को अधिकतम स्तर पर पहुँचाते हैं और आपको पहले से अधिक मजबूत एडवोकेसी आवाज़ प्रदान करते हैं।

मॉड्यूल 5: प्रगति की निगरानी करना, शेयर करना और सीखना

उद्देश्य :

- निगरानी और मूल्यांकन (मॉनिटरिंग एंड इवेल्युएशन, एम-एंड-ई) क्या है और आपके कार्य के लिए तथा अपना प्रभाव दिखाने के लिए यह किस प्रकार महत्वपूर्ण है।
- युवा कार्यकर्ता किस प्रकार अपनी गतिविधियों की निगरानी और समीक्षा कर सकते हैं।
- सहकर्मियों और सहयोगियों के साथ सीखने और शेयर करने (ज्ञान सहभाजन) का महत्व।

सत्र के उद्देश्य :

- यह जानना कि निगरानी और मूल्यांकन क्यों उपयोगी हैं
- यह जानना कि अपनी परियोजना की प्रभावी निगरानी करने के लिए आपको किस प्रकार की जानकारी एकत्र करनी है और कैसे करनी है
- यह जानना कि सीखे गए पाठ कैसे शेयर किए जाएँ और पहल को दीर्घकाल में टिकाऊ बनाने के तरीके क्या हैं

कार्यसूची

1	परिचय
2	खुली चर्चा : आपको जो जानकारी चाहिए वह कैसे हासिल करें
3	चर्चा : निगरानी और मूल्यांकन क्या हैं?
4	प्रस्तुति : अपने कार्य की निगरानी और मूल्यांकन करना
5	प्रस्तुति : अपनी जानकारी एकत्र करना
6	समूह कार्य : एम-एंड-ई टेम्प्लेट का उपयोग करना
7	खुली चर्चा : अपना अनुभव शेयर करना
8	प्रस्तुति : ज्ञान शेयर करना
9	चर्चा को निष्कर्ष पर पहुँचाना और प्रशिक्षण का समापन!

जानकारी एकत्र करना और अपना प्रमाण आधार बनाना/बढ़ाना

इन प्रश्नों के बारे में सोचिए :

- आपकी परियोजना सफल है या नहीं यह जानने के लिए आपको कौनसी जानकारी एकत्र करनी होगी?
- आप यह जानकारी कैसे एकत्र कर सकते हैं?
- अपना कार्य दिखाने के लिए आप दूसरे लोगों के साथ यह महत्वपूर्ण जानकारी (विशेष रूप से आपके प्रभाव से संबंधित जानकारी) कैसे शेयर करेंगे?
- निगरानी और मूल्यांकन (एम-एंड-ई) के बारे में आप क्या जानते हैं?
- आपके विचार में एम-एंड-ई करना महत्वपूर्ण क्यों है?

निगरानी और मूल्यांकन – जिसे अकसर एम-एंड-ई कहते हैं - गतिविधियों का एक समूह या एक प्रक्रिया है जिससे आपको अपने प्रभाव का आंकलन करने में और अपनी परियोजनाओं या अपनी सक्रियता से बेहतर नतीजे हासिल करने में मदद मिलती है। यह आपके कार्य को ट्रैक करने के, और आप जो कर रहे हैं उनके जरिए कौनसे अल्पकालिक और दीर्घकालिक बदलाव हो रहे हैं इस बात को ट्रैक करने के एक तरीके का वर्णन करता है। यह आपको यह जाँचने का एक तरीका भी प्रदान करता है कि आप जो कुछ कर रहे हैं, आप जो गतिविधियाँ कर रहे हैं और आपको जो प्रभाव मिल रहा है वह वास्तव में सकारात्मक है या नहीं, और आप जिस परिस्थिति को प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं उसे बेहतर बनाने में सहायता कर रहा है या नहीं। यदि नहीं, तो तब आप जो कुछ कर रहे हैं उसे अपने कार्य के बीच में ही, अपने कार्य को और मज़बूत बनाने के लिए, बदल सकते हैं।

अब है एम-एंड-ई का समय

निगरानी और मूल्यांकन (एम-एंड-ई) गतिविधियों का एक समूह या एक प्रक्रिया है जिससे आपको अपने प्रभाव का आंकलन करने में और अपनी परियोजनाओं या अपनी सक्रियता से बेहतर नतीजे हासिल करने में मदद मिलती है।

निगरानी का अर्थ इस बारे में नियमित रूप से जानकारी एकत्र करना है कि आपकी परियोजना का प्रभाव सकारात्मक मिल रहा है या नकारात्मक। इससे जोख़िमों को सीमित करने में, और ऐसी खामियाँ दिखाने में मदद मिलती है जिनपर अपने कार्य की योजना बनाते समय शायद आपका ध्यान नहीं गया था।

मूल्यांकन आमतौर पर आपकी परियोजना का एक अधिक गहन आंकलन होता है जो आपके द्वारा प्राप्त सफलता का स्तर मापने के लिए किया जाता है। ऐसा परियोजना के बीचोबीच किया जा सकता है, पर आमतौर पर इसे परियोजना के अंत में करते हैं जिसमें किए जा चुके सारे कार्य पर नज़र डाली जाती है और देखा जाता है कि क्या-क्या अच्छे से हुआ और किस-किस चीज में सुधार की ज़रूरत है।

निगरानी और मूल्यांकन क्यों करें?

- यह समझने के लिए आपकी गतिविधियाँ और संसाधन प्रभावी रहे या नहीं।
- घटित हुईं समस्याओं की पहचान करने और समाधान ढूंढने के लिए।
- यह पता करने के लिए कि गतिविधि की जिस प्रकार से योजना बनाई गई थी वह समस्या को हल करने का सबसे उपयुक्त तरीका था या नहीं, या फिर भविष्य में नियोजन को बेहतर बनाने पर मार्गदर्शन देने के लिए।

याद रखें : कार्यकर्ताओं को हमेशा यह कहने में समर्थ होना चाहिए कि उन्होंने क्या किया, क्यों किया, उसका क्या प्रभाव हुआ, और उन्होंने क्या सीखा।

निगरानी का अर्थ इस बारे में नियमित रूप से जानकारी एकत्र करना है कि आपकी परियोजना का प्रभाव सकारात्मक मिल रहा है या नकारात्मक। इससे जोख़िमों को सीमित करने में, और ऐसी खामियाँ दिखाने में मदद मिलती है जिनपर अपने कार्य की योजना बनाते समय शायद आपका ध्यान नहीं गया था। इससे आपको अपनी पद्धति में या कार्य करने के तरीके में, यहाँ तक कि जो गतिविधियाँ आप कर रहे हैं उनमें कार्य करने के दौरान ही, बदलाव करने का भी अवसर मिलता है, जिससे आप अपने कार्य को, और अंततः अपने प्रभाव को बेहतर बना सकते हैं।

मूल्यांकन आमतौर पर आपकी परियोजना का एक अधिक गहन आंकलन होता है जो आपके द्वारा प्राप्त सफलता का स्तर मापने के लिए किया जाता है। ऐसा परियोजना के बीचोबीच किया जा सकता है, पर आमतौर पर इसे परियोजना के अंत में करते हैं जिसमें किए जा चुके सारे कार्य पर नज़र डाली जाती है और देखा जाता है कि क्या-क्या अच्छे से हुआ और किस-किस चीज में सुधार की ज़रूरत है। आप बदलाव ला रहे हैं, और बदलाव संभव है यह सिद्ध करने के उद्देश्य से, आपके कार्य के लिए प्रमाण एकत्र करना सच में महत्वपूर्ण है। आप प्रभाव डाल रहे हैं यह दिखाने से आपकी आवाज़ को और आपके एडवोकेसी को और मज़बूती देने में, और आपकी बात सुनने के लिए और ज़्यादा लोगों को लाने में मदद मिलती है।

मैं निगरानी और मूल्यांकन करने की जहमत क्यों उठाऊँ?

- निगरानी और मूल्यांकन से आपको यह सिद्ध करने में मदद मिलेगी कि आप बदलाव ला रहे हैं और सफलता हासिल कर रहे हैं।
- निगरानी से आपको अपना कार्य और बेहतर बनाने में मदद मिलेगी - इससे आप यह समीक्षा कर सकेंगे कि क्या चीज सफल है और क्या नहीं, और आप कार्य करने के अपने तरीके में बदलाव भी कर सकेंगे।

एम-एंड-ई के बारे में और जानकारी

- एम-एंड-ई के लिए आप जो जानकारी एकत्र करते हैं, आवश्यक नहीं कि वह हमेशा औपचारिक या जटिल ही हो।
- कभी-कभी हमारे कार्य की निगरानी करने का सबसे अच्छा तरीका होता है प्रश्न पूछना।
- इसे आसान बनाइए - ऐसी विधियाँ चुनिए जिनमें अधिक समय न लगता हो।
- बहुत अधिक जानकारी एकत्र मत कीजिए - विशेष रूप से तब जब आपके पास उसके उपयोग का समय न हो।

(परियोजना के कार्यान्वयन में शामिल लोगों के लिए) आंतरिक प्रश्नों में शामिल हैं :

- हमने क्या सीखा?
- क्या चीजें अच्छी रहीं? किन चीजों को और बेहतर किया जा सकता था?
- कौनसी युक्तियाँ सबसे सफल रहीं?
- हम किस प्रकार हमारे लक्ष्यों को प्रभावित करने में सफल रहे?
- क्या हमने सभी जोख़िमों का पूर्वानुमान लगा लिया था?

बाहरी प्रश्न - उन लोगों के लिए जिन्हें हमने प्रभावित करने की कोशिश की है :

- उनके दृष्टिकोण से क्या चीजें अच्छी रहीं? और क्यों?
- हम किन चीजों को और बेहतर कर सकते थे? कैसे?
- उन्होंने कार्य की संपूर्ण सफलता/प्रभाव को कैसे देखा?

जानकारी के उपयोगी स्रोतों में शामिल हैं :

- साधारण सर्वेक्षण
- सांख्यिकी
- मुख्य हितधारकों/ स्टेक होल्डर्स के साक्षात्कार
- मीडिया
- फ़ोकस समूह चर्चाएँ
- परियोजना में शामिल लोगों के साथ नियमित समीक्षा बैठकें

आपकी परियोजना सफल रही या नहीं यह जानने के लिए आप जो जानकारी एकत्र करना चुनते हैं, आवश्यक नहीं कि वह हमेशा औपचारिक ही हो या औपचारिक तरीकों से ही एकत्र की जाए। कभी-कभी व्यक्तिगत दृष्टिकोण और लोगों से उनकी राय या गहरी समझ पूछ लेना मात्र ही जानकारी का सबसे मूल्यवान स्रोत सिद्ध हो जाता है। एक-दूसरे से और परियोजना में शामिल अन्य कर्ताओं से पूछने के लिए उपयोगी प्रश्नों में शामिल हैं:

आंतरिक प्रश्न

- हमने क्या सीखा?
- क्या चीजें अच्छी रहीं? किन चीजों को और बेहतर किया जा सकता था?
- कौनसी युक्तियाँ सबसे सफल रहीं?
- हम किस प्रकार हमारे लक्ष्यों को प्रभावित करने में सफल रहे?
- क्या हमने सभी जोख़िमों का पूर्वानुमान लगा लिया था?

बाहरी प्रश्न - उन लोगों के लिए जिन्हें हमने प्रभावित करने की कोशिश की है

- उनके दृष्टिकोण से क्या चीजें अच्छी रहीं? और क्यों?
- हम किन चीजों को और बेहतर कर सकते थे? कैसे?
- उन्होंने कार्य की संपूर्ण सफलता/प्रभाव को कैसे देखा?

जानकारी के उपयोगी स्रोतों में और अपने कार्य की निगरानी करने के तरीकों में शामिल हैं :

- साधारण सर्वेक्षण
- सांख्यिकी
- मुख्य कर्ताओं के साक्षात्कार
- मीडिया
- फ़ोकस समूह चर्चाएँ
- परियोजना में शामिल लोगों के साथ नियमित समीक्षा बैठकें

मुख्य सुझाव :

- एम-एंड-ई को सरल बनाइए।
- बहुत समय खाने वाली चीजों से बचिए।
- अत्यधिक जानकारी मत एकत्र कीजिए।
- आवश्यक चीजों पर टिके रहिए!

अब हम एक निगरानी और मूल्यांकन टेम्प्लेट (नीचे देखिए) का और इस बात का अध्ययन करने जा रहे हैं कि आपको जिस जानकारी की ट्रैकिंग और निगरानी करनी है उसे आप टेम्प्लेट में किस प्रकार दर्ज कर सकते हैं। यह टेम्प्लेट, आप अपने कार्य के जरिए जो प्रभाव और बदलाव देखना चाहते हैं आप वह प्रभाव डाल रहे हैं या नहीं और वह बदलाव ला रहे हैं या नहीं यह परखने के लिए आपको जो गतिविधियाँ करनी होंगी और जिन चीजों को ट्रैक करना होगा उनकी योजना बनाने का एक उपयोगी तरीका है।

इस बात पर ज़ोर देना न भूलें कि उन्हें :

- समय-खपाऊ विधियों से बचना चाहिए
- केवल आवश्यक जानकारी एकत्र करनी चाहिए।

यदि आप मॉड्यूल 3: सत्र 2 में विकसित रणनीति के आधार पर तालिका भर चुके हों तो उपयोगी रहेगा। सत्र 2

एक निगरानी एवं मूल्यांकन टेम्प्लेट

उद्देश्य आप सामूहिक रूप से क्या हासिल करना चाहते हैं? आपके मुख्य लक्ष्य क्या हैं?	गतिविधियाँ/ आउटपुट आप क्या करेंगे? आपके मुख्य आउटपुट क्या हैं?	संसाधन/इनपुट आपको अपना लक्ष्य हासिल करने में मदद देने के लिए किन ठोस चीजों का होना ज़रूरी है?	आप कैसे मापेंगे कि वह हासिल हुआ या नहीं? आपने अपना लक्ष्य हासिल किया या नहीं यह जानने के लिए आपको कौनसे साधनों (टूल्स), जानकारी के स्रोतों, या संकेतकों को एकत्र करने की ज़रूरत होगी? आप उन्हें कब एवं कैसे एकत्र करेंगे?	इस कम समय में क्या बदलाव हुआ? इस काम समय में आपके आउटपुट और उपलब्धियाँ क्या थे?	लम्बे समय में क्या बदलाव आया? लम्बे समय का स्पष्ट प्रभाव (जैसे, एक वर्ष तक कार्य करने के बाद) क्या था? क्या आपने लम्बे समय में कोई बदलाव देखे हैं?	क्या कोई जोख़िम या अनुमान/धारणाएँ शामिल थे?

ज्ञान शेयर करना

इसलिए अपने कार्य के अंत में उसकी निगरानी और मूल्यांकन करना काफ़ी नहीं है - यह भी एक उत्तम परिपाटी है कि आप अपने निष्कर्ष (चाहे सकारात्मक हों या नकारात्मक) दूसरे लोगों के साथ शेयर करें, विशेष रूप से उनसे जिनके साथ आप कार्य करते हैं और जिन्हें आपने अपने कार्य में जोड़ा या शामिल किया है। इस बारे में सोचिए कि अपने कार्य से आपने जो चीजें सीखीं और आपको जो अनुभव मिले उन्हें आप अपने नेटवर्क के अन्य लोगों - जिन लोगों के साथ आप कार्य करते आ रहे हैं, या वे नए पक्ष जो आपके कार्य में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, या जो आपके साथ कार्य करने में रुचि रखते हैं - के साथ किस प्रकार शेयर करेंगे।

- ज्ञान और अनुभव शेयर करने से हमारे कार्य को और मज़बूती देने में सहायता मिलती है।
- अपने पाठ अनौपचारिक चर्चाओं (जैसे, किसी युवा समूह बैठक में या किसी स्कूल में) या ऑनलाइन (ईमेल समूह, न्यूज़लेटर या फ़ेसबुक समूहों के जरिए) और अन्य गर्ल्स नॉट ब्राइड्स सदस्यों के साथ अधिक व्यापक रूप से शेयर कीजिए।

अगला चरण है आपने जो सीखा और अनुभव किया है उसे सहयोगियों और साथियों से शेयर करना, विशेष रूप से उनसे जिनके साथ आप कार्य करते आ रहे हैं।आपने जो पाठ और अनुभव सीखे हैं, और जिन विफलताओं और चुनौतियों का अनुभव किया है उन्हें शेयर करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे हर किसी को अपने कार्य को और मज़बूत बनाने में सहायता मिलती है। आपके द्वारा सीखे सबक और अनुभवों को, और जिन असफलताओं और चुनौतियों का अनुभव किया है, उन्हें शेयर करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे सभी को अपने कार्य को और मज़बूत बनाने में सहायता मिलती है।

इनके जरिए आप अपनी सीखों को शेयर कर सकते हैं :

- अनौपचारिक चर्चाएँ (जैसे, किसी युवा समूह बैठक में या किसी स्कूल में)।
- ऑनलाइन (ईमेल समूहों, न्यूज़लेटर या फ़ेसबुक समूहों के जरिए)।
- अधिक व्यापक रूप से अन्य गर्ल्स नॉट ब्राइड्स सदस्यों के साथ, जिसके लिए आप गर्ल्स नॉट ब्राइड्स सचिवालय से, या ऐसे ही मुद्दों पर कार्य करने वाले किसी राष्ट्रीय गठबंधनों, जिनमें गर्ल्स नॉट ब्राइड्स की राष्ट्रीय साझेदारियाँ शामिल हैं, से संपर्क कर सकते हैं।
- अपने कार्य की संक्षिप्त केस स्टडी लिखकर।

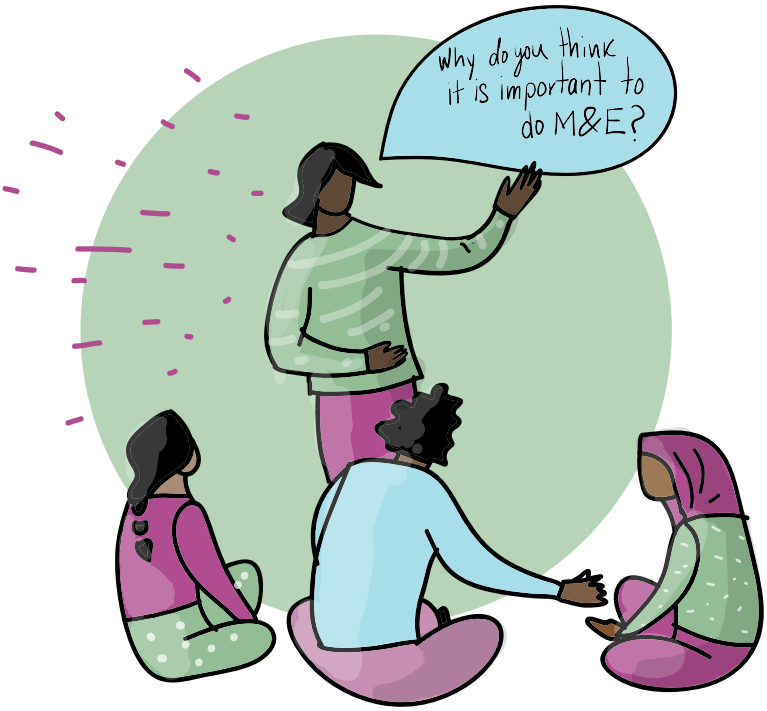

बधाई हो! अब समय है उठने और अपनी आवाज़ उठाने का!

अब आप अपना प्रशिक्षण पूरा कर चुके हैं। आपकी कड़ी मेहनत के लिए आपको बहुत-बहुत बधाई। हम मिलकर एक ऐसी दुनिया बना सकते हैं, जहां हर बच्चा जो वो चाहता है वो भविष्य चुन सकता है, और एक ऐसी दुनिया, जहां सभी युवाओं के पास अन्याय और असमानता के खिलाफ बोलने के लिए एक मजबूत आवाज हो। साथ मिलकर हम बाल विवाह ख़त्म कर सकते हैं।

अपने समूह के अन्य साथियों के साथ संपर्क में बने रहना, और अपने कार्य में एक-दूसरे की सहायता करना न भूलें।

मुख्य अवधारणाएँ

दुर्व्यवहार : किसी व्यक्ति के नागरिक और/या मानव अधिकारों का उल्लंघन। यह कोई एक कृत्य हो सकता है या बार-बार दोहराए गए कृत्य हो सकते हैं। यह शारीरिक, यौन या भावनात्मक हो सकता है। इसमें नजर अंदाज करना या दुर्व्यवहार का असफल कृत्य भी शामिल हैं।

कार्यकर्ता : वह व्यक्ति जो किसी प्रकार के सामाजिक और / या राजनीतिक परिवर्तन के लिए सक्रिय रूप से काम करता है। कई अलग-अलग प्रकार के कार्यकर्ता होते हैं और बदलाव के लिए वकालत करने के कई तरीके हैं, और ज़रूरी नहीं कि हर कार्यकर्ता स्वयं को कार्यकर्ता (activist) ही बोले। गर्ल्स नॉट ब्राइड्स इस शब्द का उपयोग किसी सामाजिक-राजनैतिक उद्देश्यों का प्रबल समर्थक होने के अर्थ में करता है।

एडवोकेसी : किसी नीति या प्रथा में बदलाव लाने के लिए कुछ गतिविधियों का एक समूह जो किसी विशिष्ट लक्ष्य वर्ग, जैसे निर्णयकर्ताओं, पर फोकस होता है। निर्णयकर्ताओं में सरकारी अधिकारी, परंपरागत नेता, अध्यापक या अन्य प्रभावशाली लोग शामिल हो सकते हैं। एडवोकेसी (advocacy) विश्वसनीय और दस्तावेज़ीकृत प्रमाणों पर आधारित होता है।

विचार-मंथन : सामूहिक रूप से विचार और योजनाएँ उत्पन्न करने के लिए कोई सामूहिक चर्चा आयोजित करना।

बच्चा : 18 साल से कम उम्र का कोई व्यक्ति।

बाल विवाह : वह औपचारिक या अनौपचारिक गठजोड़ जिसमें एक या दोनों पक्ष 18 साल से कम उम्र के होते हैं। यह लड़कों से अधिक लड़कियों को प्रभावित करता है। इसे कम उम्र में विवाह या जल्दी विवाह भी कहते हैं।

बाल अधिकार / बच्चों के अधिकार : बच्चों और वयस्कों, दोनों के मानवाधिकार होते हैं। बच्चों के भी अपने विशिष्ट अधिकार होते हैं, जैसे विशेष संरक्षण का अधिकार, क्योंकि वे शोषण और दुर्व्यवहार के प्रति अधिक असुरक्षित होते हैं। बाल अधिकार संधिपत्र (कन्वेन्शन ऑन द राइट्स ऑफ़ द चाइल्ड, सीआरसी), बाल अधिकारों की मुख्य अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संधि है। सीआरसी दुनिया की सबसे अधिक व्यापक रूप से प्रमाणित मानवाधिकार संधि है।

गठबंधन : अलाइंस की भांति, गठबंधन के भी साझा उद्देश्य होते हैं और वे संयुक्त कार्यों के लिए साथ मिलकर कार्य करते हैं। वे संरचना के मामले में अधिक औपचारिक हो सकते हैं, और उनमें समूह के नेतृत्व के समन्वयन हेतु स्टाफ़ हो सकता है। आमतौर पर उनमें सदस्यों के बीच कहीं अधिक लंबे समय के संबंध होते हैं।

जबरन विवाह : ऐसा विवाह जो एक या दोनों पक्षों की पूर्ण एवं स्वतंत्र सहमति के बिना होता है और/या जिसमें एक या दोनों पक्ष विवाह को समाप्त करने या उसे छोड़ने में असमर्थ होते हैं, इसमें भारी सामाजिक या पारिवारिक दबाव के फलस्वरूप किया गया विवाह शामिल है।

जेंडर : इसका अर्थ पुरुषों और महिलाओं के बीच के सामाजिक अंतरों और संबंधों से है, न कि उनके बीच के जैविक अंतरों से।

जेंडर समानता : जीवन में और कार्यस्थल पर महिलाओं और पुरुषों, लड़कियों और लड़कों को दिए गए समान अधिकार, ज़िम्मेदारियाँ, अवसर, व्यवहार और महत्व। जेंडर समानता का अर्थ है कि सभी उम्र और दोनों लिंगों के लोगों के पास जीवन में सफल होने के समान अवसर हैं।

मानवाधिकार : वे बुनियादी अधिकार और स्वतंत्रताएँ जो दुनिया के हर व्यक्ति को जन्म से मृत्यु तक मिले हुए हैं, और जो संयुक्त राष्ट्र की 1948 की मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा पर आधारित माने गए हैं। वे हर किसी पर, हर जगह लागू होते हैं। कोई भी एक मानवाधिकार किसी अन्य से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है।

अनौपचारिक साथ : यह साथ रहने वाले ऐसे दो लोगों के बीच है जिन्होंने कानूनी रूप से विवाह नहीं किया है।

पितृसत्ता : एक सामाजिक तंत्र जिसमें समाज के अधिकांश स्तरों और क्षेत्रों में शक्ति/सत्ता पुरुषों के हाथों में होती है। दुनिया के अधिकतर देशों में पितृसत्तात्मक संरचनाएँ हैं। परिवार में, ऐसा तब होता है जब पिताओं के पास महिलाओं और बच्चों पर प्राधिकार होता है।

शारीरिक दुर्व्यवहार : इसमें किसी व्यक्ति को शारीरिक हानि पहुँचाना शामिल है, जैसे मारना, धक्का देना, जलाना, फेंकना, जहर देना या गला घोंटना।

नीति : यह कुछ सिद्धांतों का एक समूह होता है जो निर्णयों का मार्गदर्शन करने, उन्हें गढ़ने, और परिणाम हासिल करने के लिए बनाई जाती है; इसका नेतृत्व आमतौर पर सरकार द्वारा किया जाता है; फिर इन्हें प्रायः सरकारी कार्रवाई या राष्ट्रीय योजना के जरिए लागू किया जाना होता है।

यौन दुर्व्यवहार : किसी व्यक्ति या बच्चे को उसकी इच्छा के विरुद्ध यौन गतिविधियों में शामिल होने पर विवश करना।

सामाजिक मानदंड : व्यवहार के वे नियम जो किसी समूह या समाज में स्वीकार्य माने जाते हैं। यह संभव है कि इन मानदंडों का पालन नहीं करने वाले लोगों को दूसरे लोग नकारात्मक ढंग से निशाना बनाएँ। प्रायः ये मानदंड परंपरागत प्रथाओं को बनाए रखने के लिए ज़िम्मेदार होते हैं।

युवावस्था : बाल्यकाल और वयस्क आयु के बीच की अवधि। अलग-अलग संस्कृतियों और अलग-अलग संदर्भों में आयु की परिभाषाएँ बदलती रहती हैं। गर्ल्स नॉट ब्राइड्स का सुझाव है कि इस मार्गदर्शिका का उपयोग 15 से 24 साल के लोगों द्वारा किया जाए। यह इससे छोटे बच्चों के उपयोग के लिए नहीं है।

युवा-वयस्क साझेदारी : युवाओं और वयस्कों के बीच के संबंध जिनके द्वारा प्रत्येक पक्ष, एक साझा लक्ष्य हासिल करने की दिशा में भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों और कौशलों का योगदान देता है। यह दो समान व्यक्तियों का संबंध है जिसमें प्रत्येक पक्ष के योगदानों को मान दिया जाता है।

युवाओं का जुडाव / सहभागिता : यह युवा महिलाओं और पुरुषों को सीधे तौर पर प्रभावित करने वाले मुद्दों पर उन्हें सक्रिय ढंग से जोड़ना और उनके साथ मिलकर कार्य करने का सिद्धांत और अभ्यास है। “हमारे बारे में कुछ भी हमारे बिना नहीं!”

युवा-नेतृत्व वाला संगठन : ऐसा संगठन जिसमें युवा लोग आंतरिक कार्य के मार्गदर्शन में, जैसे प्रबंधन में, रणनीतिक विकास में या संगठन के अन्य पहलुओं में, अग्रणी/मुख्य भूमिका निभाते हैं।

युवाओं के लिए काम करने वाला संगठन : अपने कार्य के प्रमुख प्राप्तकर्ता के रूप में युवाओं को लक्ष्य बनाता है। आवश्यक नहीं कि इसमें रणनैतिक निर्णयकर्ता पदों पर या उसके आंतरिक प्रबंधन एवं शासन में युवा शामिल हों (हालांकि वह ऐसा कर सकता है)।

Girls Not Brides is a global partnership of over 1000 civil society organisations from more than 95 countries committed to ending child marriage and enabling girls to fulfil their potential.

GIRLS NOT BRIDES

The Global Partnership to End Child Marriage

Published in August 2019 by
Girls Not Brides
Seventh Floor
65 Leadenhall Street
London, EC3A 2AD
United Kingdom

T: 0203 725 5858
F: 0207 603 7811

www.GirlsNotBrides.org
info@GirlsNotBrides.org
www.facebook.com/GirlsNotBrides

Girls Not Brides is a company limited by guarantee (Reg. No. 8570751) and a registered charity in England and Wales (Reg. No. 1154230)